Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

X3. P. 20 Hindi Qiss 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

~~'Aurat mard kā qiṣṣah~~

Kissā aurat mard.

Kissa Awrat Mard Hindi

क़िस्सा औरत मर्द

एक अग्रवाल श्रेष्ठ कुलकी कुलीन जैनमती स्त्री का रचा हुआ मुन्शी उजागरमल साहिब तह-सीलदार सिकन्दरा राऊ ज़िला अलीगढ़

प्रति

जिसमें ।

स्त्री पुरुष की उत्तमोत्तम वार्त्ता से पुरुष कल्पित स्त्री दोषों का निर्णय किया है ग्रन्थकार की अनुमति से

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

जनवरी सन् १८८२ ई० ॥

ओं ३ तत्सत् नमः॥

श्रीसच्चिदानन्दमूर्त्तयेनमः॥

मर्द औरत का क़िस्सा॥

पहले से हिन्दुस्तान में एक मसल चली आती है कि ज़बरदस्त के बीस बिसवे यह मसल बहुत सच है॥

ज़ोरावर कमज़ोरों को हमेशह बुरा और अपने आप को अच्छा कहते चले आये हैं चाहे कमज़ोर कैसाही अच्छा हो तारीख़ हिन्दू मुसल्मानों की इस बात की गवाह है॥

जब मुसल्मानों ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की उन में सिवाय तलवारके ज़ोरके और कोई भी उम्दगी नहीथी औरहिन्दुस्तानमें हरएकइल्म हुनरकीपरीश्तरक्कीथी॥

मगर जब मुसल्मानों ने हिन्दू फ़तह कर लिये तबहि-न्दुओं की हर एक बात हेठी होगई मुसल्मानों की हर एक बात की तारीफ़ होने लगी ऐसेही मर्द ज़बरदस्त औरत कमज़ोरहैं मर्दों ने औरतों में जो जो चाहा ऐब लगाया और अपने को सब बातमें अच्छा ज़ाहिरकिया॥

हालांकि जितने ऐब मर्दों में भरे हुए हैं औरतों में उसका दशवां हिस्सा भी नहीं है हज़ारों ऐसी दास्तान हैं जिन से औरतों की भलाई और मर्दों की बेवफ़ाई ज़ाहिर होती है मगर मर्दों ने जब कोई किताब लिखी है उसमें औरतोंही को बुरा कहा है इसवास्ते मैं एक दस्तान मर्द औरत की लिखती हूं उस के देखने से मर्द अपने दिल में इन्साफ़ करें कि कौन बुरा और कौन अच्छा है वह दास्तान यह है॥

एक शहरमें एक हिन्दू रामरछपाल नामी रहताथा जवानी में बहुत बना ठना रहा करता था कुछ तो जवानी का जोबन था उसपर उजला रंग नख शिख से दुरुस्त पतला २ छरेरा बदन जब अच्छे कपड़े पहनकर मांग पट्टी दुरुस्त करके निकलता था तो बहुत खब सरत लगता था और खबसूरत जवान औरतों के देखने और हँसी मज़ाक करने का भी शौक़ था इस वास्ते औरतें इसको नेक चलन नहीं समझती थीं मगर इस बात में कुछ बहुत बदनाम नहीं था अगर कोई दिन और इसतरह रहता तो ज़रूर बदनाम होजाता इस अर्से में उसका गौना होगया उस की औरत का नाम सरूपी था एक दिन बैशाख के महीने में चाँदनीरात में दोनों मियां बीबी अपने कोठे पर बैठे इधर उधर की बात कर रहे थे॥

पड़ोस में दो तीन जवान हँसोड़ औरत अपने कोठेपर हवा में बैठी थीं दोनों मियां बीबी की बात सुन सुनके आपसमें ठट्ठे मार रही थीं रामरछपालने अपनी औरत से कहा कि औरतें बड़ी बदचलन होती हैं॥

(एक पड़ौसन दूसरी से) बोली॥

देखो जले की बात अपनी औरत के साम्हने कैसा भला मानस बनता है॥

दूसरी—जला आप तो बदचलन है औरतों को बुरी बताताहै दिन भर सिंगार करै था कि कोई मुझपर रीझे॥

तीसरी—कहदूं पुकार के सारी बात सारी शेखी किर किरी होजायगी॥

पहली—हाँऐसा ग़ज़ब न करना पहिले सारी बात तो सुन लो॥

रामरछपाल की औरत को यह बात बुरी मालूम हुई औरत ने कहा कि यह सब बात झूंठ है मर्दोंने एकतरफ़ी

कहानी बनाई हैं औरत क्या सबही बदचलन होती हैं जो कोई होती होगी तो वह भी मर्द के क़सूर से होती होगी जो मर्द नेकचलनहो तो कोई औरत बदचलन नहीं होसक्ती कोई औरत मर्दसे यह नहीं कहती कि आ बैल मुझे मार और जैसे ऐब मर्द औरतों में बताते हैं वैसे ऐब औरतें मर्दोंमें भी बता सक्ती हैं औरतों में तो मर्द यही ऐब बताते हैं कि औरतें बेवफ़ा होती हैं मगर मर्द अपने गिरैबान में मुँह डाल कर नहीं देखते कि वह औरतों के साथ कितनी बेवफ़ाई करतेहैं अपनी औरत को बाज़ारी औरत की ख़ातिर छोड़ देते हैं या एक दूसरी औरत उसके ऊपर लाकर बिठा देते हैं॥

पड़ौसन—खूब जवाब दिया शाबाश ?

दूसरी—है बड़ी अक़्लमन्द

तीसरी—देखें अब रामरछपाल क्या बोलता है बड़ा साधु बनकर बैठा है मर्द औरतों के साम्हने ऐसेही तो करते हैं॥

चौथी—मैं भी कुछ बोली डाल दूं॥

एक—तू तो बात बिगाड़ै है पहले सुन्ने तो दे क्या २ बातें होती हैं (सब चुपकी होकर बात सुनने लगीं) मर्दने कहा हम यों नहीं मानते या तो हम औरतों के चरित्र बतावें या तुम मर्दों के ऐब बताओ ?

पड़ौसन—चल जलगये तू क्याऔरतों के चरित्र बतावैगा हम सब तेरे चरित्र जानते हैं तू पहले अपनेचरित्रतो याद कर पीछे औरतों के चरित्र बताना औरत ने कहा कि किताबों के लिखे की सनद नहीं॥

मर्द—यह क्यों॥

औरत—किताबों में मर्दोंने जो चाहा अपने मन से ढूढ़ कर लिख दिया आखों देखी बात की सनद है॥

मर्द—अच्छा पहले तुमही कहो तुमने मर्दों में क्या ऐब

और उनकी क्या बेवफ़ाई देखी है तुम औरतों से ज़ियादह मर्दों को कभी बुरा नहीं बता सकोगी॥

औरत—वाह! सुनो तो सही पहले जब कहना बुरा तो न मानोगे लड़ तो न पड़ोगे जैसा मर्दों का दस्तूर है जहां औरत की बात से क़ायल हुए औरत को मारने लगे या घर में ही आना छोड़ दिया॥

मर्द—ओहो! तुमने तो कुछ बहुत ही मर्दों की बुराई ढूंढ रक्खी है॥

औरत—जीहां! मर्द क्या मर्दोंके ऐब नहींजानते हैं अपना ऐब छिपाने को औरतोंको बुरा कहलो सुनो मैं तुमको एक हिन्दू का हाल सुनाती हूं जो हमारे मुहल्ले में बड़ा रईस है जिसका नाम छपाशंकर है यह ज़ात का अग्गरवाल बड़ा ख़ान्दानीहै जिसके बाप दादा बादशाही वक़्त में दीवान कुलथे और सब बादशाहीख़ज़ाने उनके इख्तियार में थे दौलत की कुछ शुमार नहीं थी ज़रूरत में ख़ुद बादशाह भी इनके यहां से क़र्ज़ लिया करते थे राजाई का ख़िताब था जिन्हों ने बीसों मन्दर, धर्मशाला बनाये थे और बीसोंजगह सदाबर्त्त जारीथे हज़ारों ग़रीब ग़ुर्बा मुहताज परवरश पाते थे लाखों मन नाज हर साल इसी ख़र्च के वास्ते जमा किया जाता था जब सवारी निकलती थी नक़ीब बोलते पैदल सवार परा जमाये चलेजायाकरतेथे तहवार के दिन क़ैदी जेहलख़ाने से जिसको हुक्म मिलता था छोड़े जाते थे मरहटों की अमलदारी में बावनी सहारनपुरके सूबेदार रहे घरमें सब औरतें पढ़ी लिखी होशियार चतुर थीं लड़कियों के पढ़ाने के वास्ते बड़े ब्राह्मण पण्डित जती मुक़र्रर करे थे एक २ बहू के पास बीस २ और तीस२ सखी सहेली लौंडी बांदी हाज़िर रहतींथीं घर में सब इन्तज़ाम औरतों के हाथ में रहता था मर्द भी अपने कामों का ज़िक्र औरतों से करके सलाह लिया

करते थे और औरतों का इनके घर में बहुत आदर था उनके लिहाज़से कोई मर्द कुछ बदचलनी नहीं कर सक्ता था रूपाशंकर की दादी ऐसी अक़्लमन्द और होशियार नेकनाम थी अब उसकी तारीफ़ होती है सब घर में उसके सबबसे एकबात बनरहीथी; सदारहे रामका नाम; आपस में मर्दों के फूट पड़ने लगी सब भाई बन्द बेटे पोते जुदा २ होगये सब जायदाद हिस्सों में बटगई नक़दी जो जिसके हाथ चढ़ी दवाली अमल्दारी के उलटपलट से क़दीमी मंसबभी जाता रहा ख़ैरातभी कम होगई औरक़िस्म२के फ़िज़ूल ख़र्च बढ़गये और सब भाई बन्दों से रूपाशंकरके बापका कारबार अच्छाथा पंद्रह बीसगांवज़मीदारी के थे और दो बड़े तख्त गांव माफ़ीके थे सब दिसावरों में साहूकारे की कोठियां खुली हुई थी और मकानभी बड़ाआलीशान था दरवाज़ेपर हाथी झूमतेथे ड्योढ़ी पर सिपाहियों का गारद रहता था घन्टा बजता था उसके अन्दर बहुत बड़ा आंगन था जिसमें जगह २ फ़व्वारे बने हुएथे संगमरमर का सफ़ेद फ़र्श लगा हुआथा उसमें ऊंचा लम्बा चौड़ा सहनचबूतरा बना था जिसपर बड़ी आलीशान संगमरमर सतूनों की बारहदरी दुहरी बनी हुई थी जिसके पिछले दरवाज़े पाईंबाग़ में थे यह बारहदरी खूब सजी सजाई रहती थी रंग बरंग के पर्दे बड़ी शोभा देते थे बाग़ में क़िस्म २ के फल फूल भरे हुए थे बीचोंबीच एक सुन्दर बँगला बना था जिसपर फूलों की बेल चढ़ी हुईथी बसन्त ऋतु में बाग़ के हौज़ों में तरह २ का रंग भरा जाता था और रंग में मुकेश सुनहरी और रुपहरी बारीक काटकर डाले जाते थे जब बारहदरी के आंगन में रंग बरंग के फ़व्वारे छुटते थे उस वक़्त चांदनी रात में सुनहरी और रुपहरी मुकेश के रेज़े रंगके साथ निकलते हुए मिस्ल तारों के अजब बहार देते थे औरतों के बैठने

को इस तरह के ऊपर के दरजे में मकान बने थे वे सब औरतें जनाने मकान से ऊपर २ आकर आंगन और बाग़ की सैर पर्दे से देख सक्ती थीं जनाने मकान में औरतों के रहनेको हवादार उम्दे मकान बनेथे सब बहू बेटियां नित नये ज़ेवर कपड़े से सजी सजाई रहती थीं किसीबातकी कमी नहीं थी जब तक मर्दों का चाल चलन अच्छा रहा तबतक सब बात का कारखाना बना रहा रूपाशंकर की दादी रूपाशंकर के बाप के सामने मरगई उसका मरना बड़ी धमसे हुआ नगर जेंवनार की गई गंगाजी केकिनारे छतरी बनी सदावर्त्त जारी किया गया रूपाशंकर को उसके बाप ने बहुत अच्छी तरह लिखाया पढ़ाया इसकी शादी एक बड़े खान्दान में हुई रूपाशंकर की बहू बड़ी सुन्दर और पढ़ी हुई थी जैसे राजा इन्द्र की रानी हो उसका नाम चन्द्रकुँवर था मियां बीबी में बड़ा मुहब्बत प्यार था यह औरत बड़ी धर्मात्मा थी इसका नित नेम था कि ठाकुरद्वारे में जो महल के बाग़ में था पूजन करके भोजन किया करती थी जब पूजन के वास्ते जाया करती तो सहेलियां पूजा का सामान लिये आगे पीछे होतीथीं किसी के पास फूलों की डलिया किसी के पास नारियल,दीपक, नैवेद्य, भोग का भोजन होता था आप सबके बीचमें ऐसी सोहती थी जैसे तारों में चांद सोहता है हर साल ग़रीब कंगालों को जाड़ोंमें कम्बल रज़ाई दिया करती थी दूसरे दिवाली,तीज, सलूनों सब तहवार बड़ी धमधाम से रचाये जाते थे ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणा ग़रीबों को खैरात नौकर चाकरों को इनाम दिया जाता था थोड़े दिन पीछे रूपाशंकर का बाप भी मरगया अपने बापके मरने से थोड़े दिन बाद तक सीधा बना रहा अपनी औरत से अक्सर कहा करता था कि मैं तुम पर दिलो-जान से आशक़ हूं तुम बिन मुझको दो घड़ी भी चैन नहीं

पड़ता रामरछपाल ने अपनी औरत से पूछा कि यह बात तुमको क्योंकर मालूम हुई ॥

औरत—ये लो और सुनो ऐसी बात कहीं औरतों में छिपी रहतीहै सब औरतें अपनी संग सहेलियों में अपने मर्दों की प्यार की बात करती हैं ॥

मर्द—तो हजोभी करती होंगी ॥

औरत—अच्छी औरतें अपने मर्दोंकी हजो नहीं करतीं जो करती हैं उनको औरतें आपस में हंसती हैं ॥

मर्द—तुम कहती हो मर्द बेवफ़ा होते हैं रूपाशंकर के खान्दान में तो किसी मर्दने औरतों के साथ बेवफ़ाई नहीं करी ॥

औरत—ऐसा चाल चलन मर्दोंका किसी खान्दान में पाओगे ॥

मर्द—किसी २ में अजी सैकड़ों हज़ारों ऐसेहैं ॥

औरत—अच्छा बतावो सौ में कितने मर्द ऐसे हैं जो अपनी औरत के साथ वफ़ादारी करते हैं ॥

मर्द—जो औरत अच्छी होतो सभी मर्द वफ़ादारी करें ऐसा कौनसा मर्दहै जो अपनी अच्छी औरत से वफ़ादारी नकरे ॥

औरत— मालूम नहीं तुम अच्छी किस को कहते हो अच्छी औरत कैसी होती है तुम अच्छी खूबसूरत को कहते हो या नेक चलन को ?

मर्द—अच्छी उसको कहतेहैं जो नेक चलनभी हो और खूब सूरतभीहो और मर्दकी मरज़ीके मुवाफ़िक़ भी हो ॥

औरत—क्या ऐसी औरतसे मर्दकीअनबननहीं होती ?

मर्द—हरगिज़ नहीं ॥

औरत—अजी बस रहने भी दो मैंने तो ऐसी औरतें देखी हैं जो बड़ी खूबसूरत हैं और जिन्होंने कभी दूसरे मर्दको आंख भरके नहीं देखा और अपने मर्द की किसी

बात में उज़्र नहीं किया वह छूटी पड़ी हैं और उनका मर्द एक भंडी बद शकल बाज़ारी औरत पर मायल हैं और वह औरत उसके मुंह भी नहीं लगती बात २ पर भिड़कती और बुरा भला कहती है क्या तुम इस बातको नहीं जानते॥

मर्द—पराया हाल दूसरे को अच्छी तरह मालूमनहीं हुआकरता तुमक्या जानो ऐसी औरतोंमेंक्या ऐब होता है जिससे मर्द का मन खट्टा होजाता है॥

औरत—यहतो ऐसी बातहुई जैसे किसीबनिये ने एक पैसे का सौदा किसी आदमी को दिया था इत्तफ़ाक़ से पैसा भी सौदे में चला गया जब उस आदमी ने देखा कि पैसाभीउलटा चलाआया तो उस आदमीने अपनेदिलमें कहा कि अब भी बनिये ने कुछ कमायाही होगा॥

मर्द—चलो अब इस बहस को रहने दो तुम क्रपाशंकर का हाल कहो औरत ने इस तरह कहना शुरू किया॥

क्रपाशंकर की औरत को सब संग सहेली और लौंडी बांदी बीबी जी कहा करती थीं कई टहलनी उसके बाप के घर की थीं यहसब ज़रा २ बात दीवानख़ाने की बीबी जी के कान में पिरोया करती थीं क्रपाशंकर की रोज़ २ सोहबत बिगड़ने लगी थोड़ी उम्र के खूबसूरत लड़कों ने उसके पास आना शुरू करदिया क्रपाशंकर भी उनलड़कों से प्यार मुहब्बत हँसी चुहल की बात करने लगा यह सब बात लौंडी बांदियों ने बीबी जी तक पहुंचाई बीबी जी को झरोखे से सबबात दिखादी क्रपाशंकर की औरत बड़ी अक़्लमंद थी उसने समझा कि अभी से बुरी बात को रोकना चाहिये जब बहुत बढ़ जावेगी तब रोकना मुश्किल है यह बात सोच कर एक दिन बातों२ में क्रपाशंकर की औरत ने कहा कि आज कल तुम्हारे पास लौंडे बहुत आते हैं क्या इनको किसी इल्म की तालीम

हुआ करतीहै या योंही इनको आने बैठने का शौक़ है॥

कृपाशंकर—नहीं तालीम तो कुछ नहीं होती वैसे ही चले आते हैं॥

औरत—क्या आप लौंड़ों की सुहबत में बैठने लगे यह तो खब सज धज बनाकर आते हैं सब बदवज़ै मालम होते हैं कृपाशंकर इस बात पर किसी क़दर लजाया और चुप होरहा कुछ जवाब न दिया जब औरत ने कहाकि अगर आप को नाग़वार नहो और आप इजाज़तदें तो मैं आप को अपने पड़ौस के एक आदमी की बात सुनाऊं जिस से आप को मालूम हो कि ऐसे बदवज़ै लौंडों की सुहबत का क्या नतीजा होता है मर्दने कहा कहो हम कुछ बुरा नहीं मानते बुरा तो वह माने जिस में कुछ पानी मरता हो औरत ने कहा कि हमारे पड़ौस में एक आदमी रहता है उस का नाम हरदेवा है और उसकी औरत का नाम पारवती महा सुन्दर नेकचलन गोरा रंग नख शिख से दुरुस्त चांद सा गोल मुखड़ा बड़ी २ आंख सुवा सी नाक पतले पतले सुर्ख़ होंठ दांत जैसे मोतियों की लड़ीं लम्बे २ घंगरवाले बाल जो बोले तो जाने मुंह से फल झड़ें हैं और सीधी ग़ैर मर्द ने उसका बोल भी नहीं सुना होगा॥

मर्द—हमने नहीं सुनी वह ऐसी कौनसी है?

औरत—तुम क्या सुन्ते तुम से कौन कहता॥

मर्द—अच्छा और बताओ?

औरत—अब हरदेवा का हाल सुनो उसके बाप ने अच्छी तरह लिखाया पढ़ाया मगर लड़कपन ही से बद चलन उट्ठा पहले तो आप लोगों का माशूक़ बना रहा जब बड़ा हुआ तो आप लौंडों को माशूक़ बनाया लौंडे रात दिन उसके पास जुड़े रहने लगे एक दफ़ै किसी आदमी ने किसी लौंडे से सरकार में नालिश करा दी सर-

कार से एक काग़ज़ हरदेव के नाम आया पुलिस का सिपाही लाया था बहुत लोग जमा होगये थे मैंने भउजो अपनी पनहयारी को भेजा कि देखो तो हरदेवा के मकान पर लोग क्यों जुड़ रहे हैं क्या बात हो रही है उसने आकर मुझ से सब बात कही मैं तो मारे शरम के मर २ गई जितनी औरतें मेरे पास बैठी थीं सबकी सब थू २ करने लगीं और भउजो से गोद२ कर बात पूछने लगीं॥

एक बोली—भउजो क्या २ बात सुनी?

भउजो—मैंगई देखा कानिष्टबिल है और मुहल्ले के लोग हैं और ऐसे बात होरही है॥

कानिष्टबिल—लाला हरदेव इस क़ाग़ज़ पर अपने दस्तख़त करदो॥

हरदेवा—कैसा क़ाग़ज़ है भाई॥

कानिष्टबिल—तुम्हारे नाम पर नालिश हुई है॥

हरदेवा—ऐं॥

कानिष्टबिल—ऐंटें के भरोसे न रहना इस काम में आदमी चौदह वर्ष को जाता है॥

हरदेवा का रंग फ़क़ होगया बात मुंह से नहीं निकलती थी मुहल्ले वालों ने पछ २ कर और भी शरमाया॥

एक—लाला हरदेव कौन लौंडा था॥

दूसरा—क्या वाहियात है॥

तीसरा—बद सुहबत हमेशा आदमी को ज़लील करती है॥

चौथा—अजी यह बड़ा पाप है॥

पांचवां—भुगतेगा अपनी करनी को॥

हरदेवा चुपचाप नीची गर्दन किये बैठा था फेर मैं तो चली आई थोड़ी देर में हरदेवा की भंगन आगई हमारा घर भी उसी के ठिकाने में है वह कहने लगी कि आज मैं हरदेवा के घर रोटी लेने गई थी इतने में हरदेवा भी

आगया मैं ओट में खड़ी होगई हरदेवा की बहू ने पूछा कि आज क्या झगड़ा था ?

हरदेवा—कुछ नहीं॥

औरत—याती कुछ इतने लोग जुड़े थे॥

हरदेवा—एक आदमी ने हमारे नाम नालिश करादी है॥

औरत—क्या नालिश कुछ बताओ तो ?

हरदेवा—योंही वाहियात॥

औरत—अच्छा कुछ बताओ तो हम भी सुनें॥

हरदेवा—एक झूंठी नालिश किसी दुश्मन ने किसी लौंडे से करादी है॥

औरत—देखो जिस बात को मैं मने करती थी तुमने न माना॥

हरदेवा—हमने क्या किया था॥

औरत—बस अबतो शरमाओ अब भी इस बुरे काम से तोबा करो॥

हरदेवा—अब हमने क़सम खाई किसी लौंडे को अपने मकान पर नहीं आने देंगे नाहक़ बदनाम होते हैं॥

औरत—नाहक़॥

हरदेवा—और क्या॥

औरत—ख़ैर जो किया सो किया हमारा जी ही जानता है मगर हमारी सुनता कौन है आख़िर यह दिन देखना सारे शहर में रुई सी तुम रही है फेर मैं तो चली आई इस वास्ते ऐसे लौंडों का पास आना बैठना आदमी को बदनाम करदेता है॥

कृपाशंकर—फेर उस हरदेवाके मुक़द्दमे का क्या हुआ

औरत—सुना ख़ारिज होगया मगर हरदेवा का रुपया बहुत ख़र्च पड़ा॥

कृपाशंकर—अजी झूंठा मुक़द्दमा होगा ?

चन्द्रकुँवर—और उम्र क्या है?

नन्दो—कोई होगी तीस वर्ष की॥

चन्द्रकुँवर—जब जाने हम को भी दिखा दे॥

नन्दो—क्या कुछ बड़ी बात है मैं कल ही दिखा दूंगी एक दिन लाला तो गाँव गये थे नन्दो धोखा देकर रंडी को बुला लाई चन्द्रकुँवर को ख़बर कर दी और आप रंडी को दीवानख़ाने के सहन में बातों लगा रक्खा चन्द्रकुँवर ने रंडी को देखकर अपना माथा पीट लिया और अपनी सखियों को बुला कर दिखाया कि देखो मर्दों की बात खीर की थाली छोड़कर बाजरे की राबड़ी को पसंद किया॥

एकबोली—बीबी जी यह वही रंडी है जो लालाजी के पास आती है॥

चन्द्रकुँवर हाँ वही तो है इसी वास्ते मैं तुम्हें दिखाती हूं कैसी सुन्दर है॥

दूसरी सखी—ऐ है यह तो कोई कंजरी है क्या जाने नन्दो किसको बुलालाई है॥

तीसरी—ऐ नन्दो क्या ऐसी बावली है॥

इस औरत को देखकर चन्द्रकुँवर को बहुत रंज हुआ रंज अफ़सोस की घटा उसके चांद से मुखड़े पर छागई पड़ौसनें ने यह बात सुनकर कहने लगीं कि मर्द ऐसेही तो होते हैं किसी ने सच कहा है अपने घरकी खांड़ किर किरी बाहर का गुड़ मीठा॥

एकबोली—क्या जाने मर्द अपने घर की औरत छोड़ कर क्यूं बाज़ारी औरत पर मरते हैं उन में क्या बात अच्छी होती है॥

दूसरी—बात २ कुछ नहीं होती फ़क़ीरों की तरह घर २ के टुकड़े खानेका चसका पड़ जाता है किसी फ़क़ीर को पेट भर भोजन करादो मगर जब तक वह दो चार

घरों के मांगे टुकड़े न खालेगा तब तक तृप्त नहीं होगा॥

तीसरी—बस हां यही बात है देखो तो जब तक कोई रण्डी अपने पेशे में रहती है तब तक मर्द उस पर आशक़ रहता है और जब उस रंडी को घर में डाल लेता है तब वह भी नियादरी होजातीहै फेरऔरको ढूंढ़नेलगता है॥

चौथी—सच बात है मर्द ज़ात किसी का मीत नहीं अपने मतलब का मीत है फिर भला औरतों का जी किस तरह न जले फिर सब चुप होकर दास्तान सुन्ने लगीं॥

रामरछपाल की औरत ने कहा छपाशंकर की औरत सूख कर कांटा होगई सखी सहेलियों ने बहुत कुछ समझाया मगर कुछ फ़ायदा न हुआ आख़िर यहां तक नौबत पहुंची कि चारपाई से लग गई छपाशंकर की बेवफ़ाई देखो कि एक दिन भी आकर ख़बर न ली जो कहा करता था कि मैं तुम पर आशक़ हूं वह एक चुड़ेल की ख़ातर ऐसा कठोर बन गया॥

रामरछपाल—क्या सबही ऐसे होते हैं॥

औरत—फ़िर वही बात कही क्या मैं सबको कहती हूं मैं तो यह बात दिखलाती हूं कि मर्द कैसे होते हैं जो औरतों को बुरा कहते हैं॥

मर्द—औरतों को मर्दों का अदब करना चाहिये कोई ऐसी बात जिससे मर्दकी तौहीन होती हो नहीं कहना चाहिये॥

औरत—छपाशंकर की औरत ने क्या कोई सख्त बात कही थी॥

मर्द—ज़रूर उसने अपने मर्द से लड़ाई की होगी॥

औरत—यह तो ज़बरदस्ती की बात है बेशक मर्द का दरजा ऊंचा मगर औरतें भी तो सब लौंडी बांदी नहीं है भला मैं तुम से यह पूंछती हूं कि औरत क्या वैसेही माँ बाप और ख़ान्दान की बेटी नहीं होती जैसे माँ बाप

और ख़ान्दान का बेटा मर्द होता है ब्याह या निकाह दोनों का क्या एकही शर शास्त्र के मुताबिक़ नहीं होता मर्द कमाई करके औरतों की परवरिश करता है औरत घर का काम धन्धा और बाल बच्चों की परवरिश करती है मर्द को भगवान ने औरत का अफ़्सर बनाया है औरत को दुन्यां में सिवाय अपने मर्द के और कोई आसरा नहीं फिर अगर मर्द औरतों के साथ बेवफ़ाई और बे रहमी और ज़ुल्म का बरताव करें तो इससे ज़ियादा और क्या बुराई होगी और फिर इसपर औरतों को बुरा और अपने को भला कहते हैं भला तुमही बताओ यह हठधर्म्मी है या नहीं?

मर्द—औरत जाहिल होतीहै इस वास्ते मर्द औरतों में अन बन होजाती है॥

औरत—ऐहै जब कहते हो मर्दों की तरफ़दारी की कहते हो जो मर्दही लड़कियों को न पढ़ावें तो औरतें कहां से पढ़ लिख जावें और मर्दही क्या सब पढ़े लिखे होते हैं क्या मर्द दूसरा ब्याह इसी वास्ते करवाते हैं क्या इसी वास्ते बाज़ारी औरतों को घर में डालते हैं क्या इसी वास्ते लौंडों को माशूक़ बनाते हैं क्या वह औरतें जाहिल नहीं होती यह सब बात मर्दों की बनावट है मर्द को किसी औरत के सुख दुख की कुछ परवाह नहीं होती वह अपनी थोड़ीसी दिल्लगी के वास्ते दूसरे की सारी उम्र की तकलीफ़ का भी ज़रा ख़याल नहीं करते और उस पर औरतों को बुरा और बेवफ़ा बतलाते हैं देखो अंगरेज़ भी तो हैं अपनी औरतों की कैसी क़दर करते हैं उनको कैसा सुख देते हैं॥

मर्द—जो औरत मर्द की मरज़ी के मुवाफ़िक़ रहे तो मर्द औरतों में कभी बिगाड़ नहो जब मर्द औरत के मिज़ाज और चलन से तंग होजाता है तब लाचारी को मर्द

कोई दूसरी फ़िक्र करता है मर्द के कहने को औरत तामील नहीं करती ज़रा २ सी बात पर मर्दों से लड़ाई झगड़ा करती हैं फिर भला मर्द का मन किस तरह ऐसी औरत से कभी मिल सक्ता है यह क़सूर औरतों का है या मर्दों का॥

औरत—तुम्हारा मतलब यह है कि औरत अपने मुंह पर मुहर लगालेवे मर्द जैसा चाहै काम करै किसी बात पर औरत उज्र न करे इसी बात में मर्द खुश रह सक्ता है मर्द तो अपने ऐश में सैकड़ों रुपया उड़ावे औरत खाने को भी न मांगे जो मर्द तमाशबीनी करे दूसरी औरत अपने पास रखले तो भी ज़बान न हिलावे बस इसी वास्ते मर्द औरतों को बुरा कहते हैं॥

मर्द—अब इन बातों को रहने दो तुम दास्तान पूरा करो॥

औरत—अब चन्द्रकुँवर का हाल बहुत तंग हुआ तो एक दिन कृपाशंकर की माँ ने कृपाशंकर को बुलाया॥

कृपाशंकर की माँ—अरे शंकर तूने तो घर में आने की क़सम खाली तेरी तरफ़ से कोई मरो तुझे कुछ परवाह नहीं देख तो बहू का क्या हाल होगया है जो तू इस की ख़बर नहीं लेता तो इस के बाप के घर भेजदे वहां इस का इलाज तो होगा ऐसा भी क्या निर्दयी पन है॥

कृपाशंकर—मैं कोई बैद हकीम हूं पण्डित जी इलाज तो करते हैं आराम हो जायगा कुछ बद परहेज़ी करती होगी॥

माँ—बेटा हमारे ख़ान्दान में कभी मर्दों ने औरतों की ऐसी बे क़दरी नहीं करी जैसी अब होती है हमारे घर में जब कोई औरत को तकलीफ़ हुई है उन के मर्दों को चैन नहीं पड़ा हमारे घर में कभी कोई औरत नियादरी नहीं हुई इसी से अब तक हमारे घर की बात बनी है

अब मालूम नहीं क्या होना है कृपाशंकर ने गर्दन नीची करली कुछ जवाब नहीं दिया उस की माँ ने कहा कि अब हमारी ज़िन्दगी में थोड़े दिन बाक़ी रह गये हैं ज़िन्दगी का कुछ भरोसा नहीं हमारा इरादा तीरथ यात्रा का है अब हम तीर्थ यात्रा को जावेंगे तुम्हें इख्तियार है जिस तरह चाहो रहो कृपाशंकर की माँ ने यात्रा की तय्यारी कर दी कृपाशंकर की बहू चन्द्रकुँवर ने भी अपनी सास से कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी मेरा भी जन्म सुफल होजायगा जब कृपाशंकर ने देखा कि बुढ़िया माँ बीमार औरत दोनों ऐसी जाती हैं जिनके सही सलामत आने की कुछ उम्मेद नहीं है जो यह दोनों रास्ते में मर गईं तो मेरी बहुत बदनामी होगी तब इसने अपनी माँ को समझाया कि अभी थोड़े दिन और ठहरो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा उसने मंज़ूर कर लिया कृपाशंकर की माँ सब हाल सुन चुकी थी उसने अपने दिल में सोचा कि जो कृपाशंकर भी हमारे साथ चलेगा तो सब इल्लत इससे छूट जावेगी थोड़े दिनों में सब तय्यारी होगई जगन्नाथजी की यात्रा को सब चले गये॥

रामरक्षपाल ने अपनी औरत से पूछा रंडी तो साथ नहीं गई उसने कहा जो कृपाशंकर की माँ साथ न जाती तो रंडी को ज़रूर साथ लेजाता चन्द्रकुँवर को भी आराम होगया छः महीने यह सफ़र रहा इस अर्से में रंडी का साथ छूटने से कृपाशंकर को फिर अपने घर की मुहब्बत होगई चन्द्रकुँवर को ख़ौफ़ था कि जब फिर घर पहुंचेंगे वही पापनी फिर आवेगी इस फ़िकर में थी कि कोई ऐसी तजवीज़ निकले जो फिर पहली सी लत न लगे एक दिन चन्द्रकुँवर ने कृपाशंकर से कहा कि अब मेरा घर ले जाना फ़ज़ूल है॥

कृपाशंकर—तो तुम रास्ते में कहां रहोगी?

चन्द्रकुँवर— गंगा जी की धार में जाकर अपने आपको गंगाजी के सुपुर्द कर दूंगी॥

कृपाशंकर—यह क्यं?

चन्द्रकुँवर—क्या तुम नहीं जानते जिस औरत का मर्द अपनी औरत को छोड़कर बाज़ारी औरत से रहे उससे ज़ियादा दुनया में कोई निर भागन नहीं है जो वही बात न पूछे तो औरत को जीने से मरना हज़ार दर्जे बेहतर है जो औरत अपने मर्द से लड़ाई झगड़ा करे तो भी बुरी बात है जो कुछ न कहै तो किस तरह रहै॥

कृपाशंकर—सैकड़ों औरत हैं जो अपने मर्द की कुछ परवाह नहीं करती॥

चन्द्रकुँवर—होगी वह औरत वैसे ही होंगी जैसे वह मर्द जो अपनी औरतों की कुछ परवाह नहीं करते भला तुम मुझे यह तो बताओ जो औरत ऐसी हैं कि अपने मर्द की परवाह नहीं करती उन को अगर मर्द छोड़ देवे तो खैर और जो औरत अपने मर्द को देखकर जीती है उन के मर्द उन को छोड़ देवे तो वह औरत क्या करे॥

कृपाशंकर—वह औरत उस मर्द को छोड़ देवे॥

चन्द्रकुँवर—जो औरत भले घरों की हैं वह मरना मंज़ूर करती हैं ऐसी बात उन के हक़ में गाली है यह तो हिम्मत भगवान ने मर्दों में ही दी है कि वह बुरा काम करते हुए अपने खान्दान की इज्ज़त हुर्मत का कुछ भी ख़याल नहीं करते खुल्लम खुल्ला जो जी चाहै करें न लोक लाज से डरें न परमेश्वर से ख़ौफ़ करे औरत कोई भी ऐसी नहीं जो बुरा काम करे और फिर भी इज्ज़त दार बनी रहे उस को अव्वल तो औरतें ही ताने दे २ कर मार डालें और दूसरे मर्द निकाल बाहर करें औरतों में ऐसी बात नहीं कि ऐब करे और लालों की लाल बनी रहे॥

छपाशंकर—मर्दों को क्या मालूम होता है औरतें क्या करती हैं॥

चन्द्रकुँवर—यह सब बात फ़ज़ूल है आख़िर औरत किसी मर्द से मुवाफ़क़त रखती होगी क्या उसमर्द के यार दोस्त न जानते होंगे और उससे और लोग न जानें गे यह बात कहीं छिपी रह सक्ती है तुमने तो यह और झगड़ा छेड़ दिया मतलब की बात छोड़ दी अब आप मुझे यह बतलाओ कि क्या आपने मुझसे नाराज़ होकर बेखा को रक्खा है अगर यह बात है तो मुझे बताया जावे कि मेरा क्या क़सूर है नहीं आप क़सम खावें कि फिर ऐसा न होगा रामरछपाल की औरत ने कहा कि कोई क़सूर हो तो बतावे बिना बात क्या कह देवे जब छपाशंकर कुछ न बता सका तो लाचार उस को क़सम खाना पड़ी कि अब हम कभी ऐसा न करेंगे यह क़सम छपाशंकर ने गंगा के निकट खाई थी इसलिये उस को क़सम का पास करना पड़ा नहीं तो ऐसे मर्दों की क़सम का भी क्या भरोसा होसक्ता है रंडी के साम्हनें सैकड़ों झूंठी क़सम खाजाते हैं जब छपाशंकर ने इक़रार कर लिया तब चन्द्रकुँवर फूली अंग में न समाई और अपने दिल में कहने लगी कि मेरी याचा सुफल होगई जब सखी सहेलियों में इस बात का ज़िक्र हुआ सब ने चन्द्रकुँवर को मुबारकी दी रामरछपाल की औरत ने कहा कि हिन्दू ज़ात में तो ऐसे आदमी बहुत कम हैं मगर मुसल्मानों में ऐसे बहुत आदमी हैं रामरछपाल ने कहा अच्छा अब किसी मुसल्मान का भी दास्तान सुनाओ॥

औरत ने कहा कि आज रात बहुत गई कल कहूंगी पड़ौसनें भी अपने घर चली गईं अगले दिन पड़ौसनें आठ ही बजे से आकर जमा होगईं रामरछपाल की औरत ने मुसल्मान का दास्तान इस तरह कहना शुरू किया॥

दास्तान ॥

दिल्ली में मीरआशक़ के कूचे में एक नव्वाब रहा करते थे उनके बाप दादा बहुत बड़े रुतबे के लोग थे बादशाही वक़्त में हफ्त हजारी थे जब से बादशाही बिगड़ी उन्का कार बार भी बिगड़ गया और यहां तक नौबत पहुँची कि जायदाद असबाब सब बेचकर खा गये इस नव्वाब के तीन बेटे थे बड़ा बेटा ता हैदराबाद में नौकर होगया था और मँझला बेटा जवान था उसका निकाह नहीं हुआ था छोटा बेटा मक्तब में पढ़ता था चितली क़बर पर एक और नव्वाब रहते थे उनकी बहुत जायदाद लाखों रुपये की दिल्ली में थी और कई गांव माफ़ीके थे उसके सिर्फ़ एक बेटी थी खुरशैद बेगम उसका नाम था और ऐसी खूबसूरत थी कि जानों खुरशैदही थी उसकी माँ बड़ी होशियार नेक और मशहूर थी उसने अपनी प्यारी बेटीका अच्छी २ उस्तादियोंसे पढ़ाया लिखायाथा और सब तरह का हुनर जा औरतों का सीखना चाहिये सिखाया था सब औरतों में इस लड़की की तारीफ़ होती थी इसकी माँ का इस लड़की के वास्ते वर की तलाश थी एक मुग़लानी ख़ानम भी इसी नव्वाब के यहां नौकर थी इसीने खुरशैद बेगमका गोद खिलाया था इस नव्वाब के पड़ौस में नसरुल्ला खां बादशाही हकीम रहा करते थे हकीम जी की बीबी मीरआशक़ के कूचे की बेटी थी और नव्वाब साहब की बेगम से भनेला था हकीम जी की लड़की क़मरुन्निसा खुरशैद बेगम की हम भोली थी एक दिन बेगम साहब खुरशैद बेगम की शादी का सोच विचार कर रहीं थीं उनके जी में आया कि हकीम जी की बीबी से इस मामले में सलाह लेनी चाहिये तब बेगम साहब ने मुग़लानी का पुकारा ?

ताल्लुक़ रखता है और उनके ख़ान्दान के तो नव्वाब साहब भी खुद जानते होंगे बड़े नामी हैं॥

बेगम—हमभी लड़के को देख सकते हैं॥

हफ़ीजन—क्यों नहीं क्या कुछ मुश्किल बात है॥

बेगम साहबनेकहा अच्छामैं खुरशैद बेगमके अब्बाजान से ज़िक्र करूंगी और फिर तुमसे कहूंगी हफ़ीजन तो रुखसत होकर चलीगई जब नव्वाब साहब घरमें आये बेगम ने उनसे सब बात कही॥

नव्वाब—ओ नव्वाब शम्सुद्दौला को हम खूब जानते हैं बड़े ख़ान्दानी हैं हमारे बुज़ुर्गों से भी कुछ रिश्ता था अगर खुरशैद की बात उनके यहां ठहरजावे तो बहुत अच्छा है बेगम ने हफ़ीजन की मारफ़त सलाम पयाम भेज कर बात पक्की कर ली यह बात इधर खुरशैद बेगम और उधर मँझले मियां को भी मालूम होगई और दोनों के दिल एक दूसरे को देखने के वास्ते मछली की तरह तड़पने लगे एक दिन मँझलेमियां की अम्मा ने अपनी मालिन को जिसका नाम सिंगारी था डाली देने के बहाने से खुरशैद बेगम को देखने भेजा सिंगारी ने खूब सिंगार करके बड़े ठस्से के साथ डाली का सामान किया दो छीबों में केले के हरे २ नरम २ पत्ते लगाकर एकमें बेला चंबेली के खुशबूदार फूलों के गजरे और हार और गुलाब सेवती के फूल और दूसरे में हर क़िस्म के मेवे क़रीने से लगाये और मँझलेमियां की अम्मा को मुलाहिज़ा कराकर एक माली के शिर पर रखवाकर चमकती हुई चली जब महलसरा के दरवाज़े से निकली मँझलेमियां ने देखा कि आज तो सिंगारी बड़ी चमक दमक से जारही है॥

मँझलेमियां—ओ सिंगारी ? ओ सिंगारी ? अहहा आज तो घोड़े के सवार कीभी नहीं सुनती यह दिमाग़ होगया॥

सिंगारी—(तुनककर) मियां कहो भी कुछ क्या कहते हो॥

मँझले—एक ज़री हमारी बात सुनलो ये आज तुम बन ठन कर चलीं कहाँ॥

सिंगारी—भयों की सों मियां मँझले अब हमें जाने दो हमें देर होती है॥

मँझले—ऐसी भी क्या जल्दी है एक ज़री सी तो बात पूछनी है॥

सिंगारी—वाह तुमभी बड़े अच्छेहो तुम्हारे हिसाब कुछ देरही नहीं होती मुझे उलटी आनकर बेगम साहब को जवाब देना है॥

मँझले—बस अब इन नख़रों को रहने दो ख़ुदा की क़सम जब तक तुम यह नहीं बतलाओगी कि डाली कहां जाती है मैं तुमको हिलने नहीं दूंगा॥

सिंगारी—मुस्कराकर यह डाली वहां जाती है जहां थोड़े दिनों में आप सेहरा बांधकर और नौशा बनकर आंयगे और तायफ़े गावेंगे॥

गूंद के लारी मालिन सेहरा।
नौशे का मेरे गूंदके लारी मालिन॥

यह सेहरा सिंगारी ने इस अदा से कहा कि मँझले मियां के दिल पर असर करगया॥

मँझले—सिंगारी तुम्हें ख़ुदाकी क़सम जो तुम हमारी एक बात न सुन लो॥

सिंगारी—अच्छा कहो॥

मँझले—क्या ख़ुरशैद बेगम के वास्ते डाली लेजाती हो अच्छा दिखलाओ तुमने ख़ुरशैदबेगम के वास्ते कौन सा गजरा बनाया है सिंगारी ने एक गजरा जो सबमें उम्दा था दिखाया मँझलेमियां ने एक बारीक काग़ज़ पर कुछ लिख कर उसका फूल बना कर गजरे में बांध दिया और

मालिन— अब और क्या मुझसे पूछती हो तुम तो खुद अक़्लमन्द सब बात जानती हो बेगम ने कहा कि ऐसी बात हमें ना पसन्द है यह गजरा तुम लेजाकर उन्हीं अपने नव्वाब को दे देना वही अपने हाथ में पहन लेंगे तुम्हें खुदा की क़सम जो और किसी को दो उन्हीं नव्वाब साहब को देना खुरशैदबेगम ने दूसरे कमरे में जाकर वह काग़ज़ तो निकाल लिया और दूसरा परचा उसी तरह बनाकर लगादिया और मालिन को गजरा वापिस दे दिया॥

खुरशैद—चौधरन इस काग़ज़ को भी देख लो हमने छुआ तक नहीं॥

मालिन—(हाथ जोड़कर) बहुत खब हजूर मैं यह गजरा उन्हीं को दे दूंगी और कह दूंगी कि जाने वह परचा गजरे में किसने लगा दिया था बेगम साहब बहुत खफ़ा हुई और गजरा फेर दिया॥

बेगम—और क्या बस यही कह देना और चौधरन कभी २ तुम हमारे यहां आया करो क्या आने का कुछ डर है॥

मालिन— हजूर लौंडी ज़रूर आया करेगी मैं जैसी नव्वाब साहब की नौकर वैसीही आपकी नौकर हूं मुझे आने में क्या उज़र॥

बेगम—तुम्हारे मँझले नव्वाब बड़े चालाक शौक़ीन मालूम होते हैं॥

मालिन—ऐहै बेगम साहबवह तो बड़े सीधे मौलवी हैं इस ज़माने की हवा उनको छूभी नहीं गई बेगम ने एक डुपट्टा मालिन को देकर रुख्सत करदिया मँझले मियां दीवान खाने में बैठे हुये राहदेख रहे थे इतने में मालिन आ पहुंची दूर से देखते ही पूछा कहो सिंगारी गजरे पसन्द आये॥

मालिन—(तुनक कर) अजी हटो भी तुमने जाने कैसा काग़ज़ लगा दिया खुरशैदबेगम ख़फ़ा होगईं गजरा वापिस कर दिया यह बात सुनकर मँझले मियां का रंग फ़क़ होगया॥

मँझले—(आप ही आप) या इलाही ऐसी तुनक मिज़ाज है॥

मालिन—नहीं मियां वैसे तो अल्लाह रक्खे बड़ी हँस मुख हैं बोलें तो मानों मुँहसे फूल झड़े?

मँझले—अरी क्या उन्हों ने काग़ज़ खोला था॥

मालिन—ऐ मियां देखा न भाला बस काग़ज़ देखते ही मुझसे पूछने लगीं सच बता यह काग़ज़ कैसा है मैंने कहा कि बेगम साहब मैं क्या जानूं उन्हों ने समझा झूंठ बोलती है मैंने क़समें खाईं भला उनको कब यक़ीन आता है जब मैंने कहा बेगम साहब वह पिटारी मैंने किसी को दी भी नहीं दीवानख़ाने में रखकर मज़दूर बुलाने ज़रूर गई थी मुझसे पूछा वहां कौन था मैंने कहाकि मँझले मियां टहल रहे थे बस मियां वह गजरा हाथमें लेकर दूसरे कमरे में गईं वहां से मेरे लिये डुपट्टा लाईं और गजरा मुझे दे दिया और कहा अपने नव्वाब साहब को दे देना वही अपने हाथ में पहन लेंगे काग़ज़ भी इसी तरह बँधा हुआ मुझे दिखा दिया॥

मँझले—लाओ तो वह गजराकहां है हमी पहन लेंगे मगर ख़बरदार वालिदे साहब से इसका ज़िक्र न करना अगर ज़िक्र किया तो तुम जानोगी मालिन ने गजरा दे दिया और कहा नहीं मियां मैं सदक़े जाऊं मुझे ज़िक्र से क्या काम पड़ा है मालिन तो महल सरा में चली गई मँझले मियां ने झट२ काग़ज़ खोल कर देखा देखते ही बांछें खिल गईं वह परचा ख़ास खुरशैदबेगम के हाथ का

लिखा हुआ था नये २ चावसें उस परचे को कईबार चूंबा और आखों से लगाया उसमें यह लिखा था ॥

कौनसा रोज़ वह होगा कि क़दम देखेंगे ॥
आप देखेंगे हमें आप को हम देखेंगे ॥

रामरकृपाल ने अपनी औरत से पूछा कि यह तुमने क्या कहा कि नये २ चाव सें?

औरत—और क्या कोई दिन पीछे यही खुरशैदबेगम होंगी जिनका हुस्न मँझलेमियां की नज़रों में फीका हो जावेगा और नई २ ढूंढ़ने लगेंगे मर्दोंमें यही तो बात है॥

मर्द—यह तो झूंठी मुहब्बत ठहरी॥

औरत—और क्या मर्दों को औरतों की सच्ची मुह-ब्बत होती है कोई ज़रा अच्छी मिल गई ब्याहता को छोड़ दी उसी पर मन लुभाया फिर उस दूसरी को भी तज दिया और देख ली॥

मर्द—कौन से मर्दों ने अपनी औरतों को नई औरतों के इश्क़ में तलाक दे दी है?

औरत—ऐ है जो मेहर का भी थोड़ासा डर न होता बात २ पर तलाक मिला करती और जो तलाक भी न मिलती तो रोटी कपड़े को तो कोई भी न पूछता अबभी कितनी औरतों को मेहर की नालिश करनी पड़तीहै॥

मर्द—अच्छा तुम उस मालिन की बात कहो फिर क्या हुआ॥

औरत (सुनो) मँझलेमियां ने परचा पढ़कर झट पट एक लौंडी को बुलाया जिसका नाम सेवती था॥

मँझले—देखो सेवती वाल्दै साहब कहां बैठी हैं॥

हमको भी कोई मौक़ा मालिन की बात सुनने का है या नहीं॥

सेवती—ऐ मियां मैं तो अभी २ आई हूं बेगम साहब बाहर के दालान में मुसहरी पर लेट रहीहैं अंदर दालान

के पर्दे छूट रहे हैं आप दीवानख़ाने के चोर दरवाज़े से होकर चले आओ और सोने का बहाना करके लेट जाओ मैं पंख झलूंगी पर्दे के अन्दर सब बात सुनाई देती है मँझले मियां चोर दरवाज़े से होकर दालान के अन्दर जा लेटे और चुपके २ मालिन की बात सुन्ने लगे॥

बेगम—सिंगारी कहो खुरशैदन को भी देखा था सूरत शकल की मिजाज़ की बात चीत की कैसी है॥

मालिन—बेगम साहब सूरत शकल की क्या पूछती हो जैसा नाम वैसी सूरत अंधेरे घर का चांदना है बाल जैसे सुम्बुलकी लटा मुंह जैसे सूरजमुखी नरगिसी आंख गाल जैसे गुलाब की पत्ती सुआ की सी नाक होठ पतले २ जैसे अनार की कली दांत जैसे मोतियों की लड़ी पान मिस्सी से मुँह ऐसा सोहै जैसा लाले की कली सुराहीदार गर्दन हाथ केलेकी गोब और कहां तक तारीफ़ करूं॥ हँसने बोलने में मुंह से फूल झड़ते हैं बटा सा क़द बेगम साहब बहुत कहना क्याबड़े नसीबों से ऐसी बहू मिलती है मँझले मियां तारीफ़ सुन २ कर बेक़रार हुए जाते थे और यह जी चाहता था कि किसी तरह अभी मिलूं॥

रामरछपाल—खुरशैद बेगम तुम से और ज़्यादा क्या खूबसूरत होंगी॥

औरत—अजी बस रहने भी दो ऐसी हँसी हमें नहीं भाती क्या जहान में सब खूबसूरतही होती हैं मर्द तो चाहै जैसी खूब सूरत उसके घर में हो जब भी उसकी नीयत डावां डोल रहती है॥

मर्द—हंसी कैसी क्या मैं झूठ कहता हूं॥

औरत—नहीं आप तो बहुत सच कहते हैं और यह कहो कि खुरशैदबेगम के हुस्न की तारीफ़ सुनकर तुम्हारी भी राल टपक पड़ी तुम भी तो आख़िर मर्द ही हो॥

मर्द—येलो और सुनों मैं सदक़े इस समझ के वाह सम-

झों भी तो क्या समझों हम ऐसे मर्द नहीं जैसे तुम समझती हो वाहरे समझ रीझ करो तो ईंट मारो॥

औरत—नहीं आप तो बहुत सीधे सादे हैं मैं सब सुन चुकी हूं पड़ौसने तुम्हारी बड़ी तारीफ़ करती हैं॥

मर्द—कैसी तारीफ़?

औरत—यही कि बड़े अच्छे आदमी हैं हँस मुख स्वभाव हैं॥

मर्द—क्या हम किसी से हँसा करते हैं॥

औरत—लो भला मुझे इस बात की क्या ख़बर॥

मर्द—फिर तुम कैसे कहती हो॥

औरत—बात पर बात मैंने भी कहदी॥

इसबात को सुनकर पड़ौसन जो सुन रहीथी बड़ी हँसी

एक—ऐ वाह बड़ा भोला बिचारा॥

दूसरी—क्यों नहीं पूरा बगला भगत है॥

तीसरी—भला इन बातों से क्या मिले है बात नहीं कहने देता बात २ में आप भला बनता है॥

चौथी—चाचा की सौगन्द ऐसो जी में आवे है अभी सारे पियाज़ के से छिलके उधेड़ दूं भला कोई पूछे ऐसा सीधा था तो सारे दिन कोठे पर क्यों टंगा रहै था इतने में रामरछपाल की औरत ने फिर मँझले मियां का हाल छेड़ा सब चुप होगई॥

औरत—अब मँझलेमियां खुरशैदबेगम के देखने को ऐसे तड़पने लगे जैसे जल बिन मीन एक २ घड़ी बरस बराबर मालूम होने लगी मालिन तो अपने घर चलीगई रात को मँझले मियां को चैन न पड़ा पहाड़सी रात घड़ियां गिन२ कर काटी सुबह होतेही मँझले मियां बाग़ में गये और मालिन को अलहदे बुला कर कहा कि किसी तरह हमें भी खुरशैदबेगम को दिखा सक्ती है॥

मालिन—भला तुम किस तरह देख सक्ते हो वहां तो

मर्द के नाम परिन्दा भी पर नहीं मार सक्ता मँझलेमियां ने एक ठंढी सांस भरी तब मालिन ने कहा मियां ऐसा घबराहट क्या है खुदा चाहै अब कोई दिनमें तुम्हारे घर ही आजावैंगी ॥

मँझले—इस अर्से तक तो बिना देखे हमारा जीना मुश्किल है ॥

मालिन—ऐ खुदा न करै ऐसी भड़ी बात मुँहसे न निकालो देखो मैं कोई तदबीर सोचूंगी अभी तो मेरी समझ में कोई बात नहीं आती ॥

मँझले—कब जवाब देगी ॥

मालिन—कल ॥

यह बात तो यहां रही अब खुरशैदबेगम का हाल सुनो उसको भी मँझलेमियां के देखने का ऐसाही शौक़ हुआ जैसा मँझलेमियां को था मगर शरम के सबब किसी से कुछ कह नहीं सक्ती थीं दिलही दिलमें घुली जाती थीं दूसरेही दिन खुरशैदबेगम का चेहरा उतर गया मुग़लानी ने खुरशैदबेगम को उदास देखकर पूछा कि खुरशैदबेगम तुम्हारा मन क्यों उदास है अल्लाह को मिहरबानी से कोई बात रंज की नहीं है पहले तो खुरशैदबेगम ने बात को छिपाया जब मुग़लानी ने बहुत ज़िद्द की तब खुरशैदबेगम ने कहा तुमको मालूम है परसों मालिन डाली कहां से लाई थी

मुग़लानी—हां वहतो मेरे साम्हने लाई थी नव्वाब शम्सुद्दौला की मालिन थी ॥

खुरशैद—यह शम्सुद्दौला कौन हैं इनके यहां से कैसी डाली आई थी ॥

मुग़लानी—इसी शहर के रईस हैं बड़े खा़न्दानी हैं उनके यहां मँझलेमियां से तुम्हारी निस्बत की बात ठह-

रती है यह बात मुग़लानी से सुनकर खुरशैदबेगम की सहेलियों ने छेड़ना शुरू किया॥

एक—अल्लाह वह कौनसा मुबारिक़ दिन होगा कि हम अपनी बेगम को दुलहन बनी देखेंगे॥

दूसरी—और हम शादियाने बजावेंगे॥

तीसरी—खुदा वह दिन करै बड़े जलसे होंगे॥

खुरशैद—ऐ वाह! अच्छी छेड़ निकाली खुदा की क़सम हमको यह बात अच्छी नहीं लगती तुम आपही दुलहन बनकर शादियाने क्यों नहीं बजवालेतीं॥

ज़ुलफ़न—ऐ तो क्या हमने कुछ बुरी बात कही है॥

खुरशैद—ज़ुलफ़न तुम बहुत मुँह चढ़गई हो खुदा जानता है तुम हमारे बीच में मत बोला करो॥

मखदूमन—सुनो तो बीबी इसमें कुछ ऐब थोड़ाही है॥

खुरशैद—तू भी ज़ुलफ़न की साथिन होगई मखदूमन तुम सबने एका करलिया है॥

मखदूमन—बड़ी हँसोड़ और ठठोल बाज़ थी झट हाथ मटका २ तालियां बजा २ कर नाचने लगी कहा कि हम तो निकाह के दिन इस तरह नाच २ गावेंगे॥

लाड़ला बना मेरा लाड़ला बना॥

मखदूमन इस अदा से मटकी कि खुरशैद बेगम भी हँस पड़ीं और हँसी को रोक कर कहा कि अच्छा तुम हमें यहां नहीं बैठने देतीं तो हम दूसरे कमरे में चली जावेंगी खुरशैदबेगम तुनक कर उठ खड़ीहुई और दूसरे कमरे में पलंगपर जा लेटीं मुग़लानी समझ गई कि खुरशैद को मँझलेमियां का ख़याल है मुग़लानी ने चुपके से कहा कि जो तुम मँझलेमियां को देखना चाहो तो मैं किसी बहाने से उनको रमने की तरफ़ले आऊं तुम झरोखे से देख लेना खुरशैदबेगमने कुछ जवाब न दिया मुग़लानी समझ गई कि मरज़ी है॥

मुग़लानी ख़ानम नव्वाब शम्सुद्दौला के मकान की तरफ़ को चली दरीबे में शम्सुद्दौला की मालिन मिलगई मुग़लानी को देखकर मालिन ने कहा बी मुग़लानी सलाम॥

मुग़लानी– सलाम चौधरन कहां से आती हो और कहां को जाती हो॥

मालिन– घर से आती हूं नव्वाब के यहां जाती हूं कहो तुम आज कहां चलीं॥

मुग़लानी– हम भी तुम्हारी सरकार में जाती हैं॥

मालिन– क्यों कुछ पैग़ाम लाई हो क्या॥

मुग़लानी–ऐ पैग़ाम काहेको लाती क्या वैसे जाने का कुछ डर है॥

मालिन– कहो खुरशैदबेगम की क्या ठहरी हमारे मँझलेमियां तो जबसे बात सुनी है उनके दमों दीवाने हो रहे हैं॥

मुग़लानी–मुझे तो इस बात का कुछ पक्का हाल मालूम नहीं॥

मालिन–ऐ है बड़ी बिचारी भोली तुझे क्या कुछ मालूम है बी मुग़लानी बात सुन तू उस सरकार का नमक खाती है मैं इस सरकार का नमक खाती हूं हमभी कभी दुलहन बने थे ब्याह से पहले हमें अपने बन्ने के देखने का चाव था और बन्ने को हमारे देखने का चाव था ऐसा ही हुआ करता है बी मुग़लानी तुम तो अब बढ़ी हुई तुमने जमाना देखा है हमें भी एक दिन बूढ़ा होना है॥

मुग़लानी– हो हो? यों कहो तुम अभी अपने को बारह वर्ष की समझती हो॥

मालिन– तो क्या मैं बढ़ी थोड़ी ही हूं॥

मुग़लानी–तो मैं बूढ़ी हूं इस मुए नजले ने बालों को

कोई ग़ैर योड़ाही है तब मुश्किल २ राज़ी हुई उसने कहा है कि परसों चार बजे खुरशैद बेगम शाहानशाह पीर की ज़ियारत को आवेंगी वहांसे हुमायूं का मक़बरा देखेंगी मुग़लानी साथ होगी तुम पहले से वहां जाकर छिप रहना मँझलेमियां खुश होगये॥

मालिन तो चली गई और यह घड़ियां गिनने लगे उधर मुग़लानी खुरशैद बेगम के पास पहुंची और कहा लो परसों मैं तुमको मँझलेमियां को दिखा दूंगी परसों वह भी शाहानशाह पीर की ज़ियारत को आवेंगे खुरशैद बेगम सुनकर चुपकी हो रहीं॥

रामरछपाल—औरत औरतों को इस तरह मर्दों से मिला देती हैं॥

औरत—ऐ वाह धन्य है? खूब समझे मर्द की बेहयाई तो देखो एक मालिन के कहने पर जाने को तय्यार होगया यह भी न समझा कि जो और कोई आदमी नव्वाब का इनको वहां छिपा हुआ देख पावे तो इनकी इज़्ज़त कैसी फिर किरी हो इसी बात पर मर्द औरतों को बेवकूफ़ और आपको अक़्लमन्द कहते हैं और दूल्हा दुलहन को देखने का कोई ऐब नहीं ब्याह से पहले मगतियरे को देख लेना? यह बात होती आई है औरतों के मनमें कोई पाप नहीं होता॥

मर्द—तो क्या मर्दों के मन में पाप होता है॥

औरत—और नहीं तो क्या जो दिल में पाप न होता तो तुम ऐसी सीधी बात को उलटा क्यों समझते॥

मर्द—अच्छा खैर चलो॥

औरत—देखो एक और बात भी है यह दास्तान जैसा मैंने सुना वैसा तुमको साफ़ २ सुना दिया जो कोई मर्द इसको कहता तो वह बीसों बात झूठी अपने मतलब की इसमें मिलाता॥

मर्द—ख़ैर अब इन बातों को जाने दो क़िस्सा शुरू करो
औरत—क़िस्से कहने मुझसे नहीं आते क़िस्से तो मर्दही कहना जानते हैं झूठे तुमार बांधते हैं॥

कहीं, बकावली, ताजुलमुलूक, कहीं बे नज़ीर बदरे मुनीर, कहीं जानआलम, अञ्जुमनारा, कहीं आज़ाद, और हुस्नआरा, बेगम और किस २ का नाम बताऊं फिर भी मर्द सच्चे बनते हैं किसी ने भी तो अपनी किताब में यह नहीं लिखा कि यह क़िस्सा हमने कैसा अच्छा गढ़ा है औरतें बेचारी तो ऐसा झूठ का पुतला बनाकर उस पर सच का मुलम्मा करना नहीं जानतीं भला तुमही इन्साफ़ करो कि मर्दों की बनाई हुई किस किताब को सच समझिये औरतों के चरित्र की कहानी को सच समझले जो बहारदानिश का सारा क़िस्सा सच हो और विरहमन का हाल भी कोई सच समझ ले तो मुजायक़ा नहीं यह क्या कि और तो सब झूंठी तूफ़ान बन्दी है एक औरतों का चरित्रही सच है॥

मर्द—अच्छा साहब क़िस्सा न सही बातही कहो॥

औरत—मँझलेमियां ने दो दिन रात जों तों करके काटी तीसरे दिन दुपहर सेही तयारी करना शुरू किया न्हा धो कपड़े बदल तय्यार होगये फ़िटन की तयारीका हुक्म दिया दो बजने नहीं पाये थे शाहानशाह पीर में दाखिल होगये अब रास्ते पर टिकटोकी लगाई कोई गाड़ी आई और इन्हों ने समझा खुरशैदबेगम आगईं जब इन्हों ने देखा कि गाड़ी पै गाड़ी जियारत के वास्ते चली आती हैं और बहुत मर्द औरत मक़बरा देखने जाते हैं तो इनके दिल में बड़ी बे क़रारी होती थी कि देखिये खुरशैदबेगम के देखने का मौक़ा मिलता है या नहीं ठीक चार बजे खुरशैदबेगम की गाड़ी भी दाखिल हुई कोचवान साईस सिपाहियों की वर्दी देख कर मँझलेमियां

ने समझा यह कोई बड़े घरकी है मँझलेमियां ने अपने खिदमतगार से कहा कि पूछो किसकी गाड़ी है खिदमतगार ने एक सिपाही से पूछा पहले तो उसने कहा तुम कौन हो तुम को क्या वासता चले जाओ तब तो मँझलेमियां ने समझा कि बस अब हम देख चुके फिर खिदमतगार ने कहा कि मँझलेमियां पूछते हैं मुग़लानी और खुरशैदबेगम ने गाड़ी के अन्दर मँझलेमियां का नाम सुना मुग़लानी ने मुस्करा कर कहा कि लो ये तो हमसे भी पहले आन डटे खुरशैदबेगम बोली कि क्या मालूम कौन है दिल्ली में सैकड़ों मँझलेमियां कहलाते हैं इतने में खुरशैदबेगम के सिपाही ने पूछा कि कौन मँझलेमियां॥

खिदमतगार—तुम नहीं जानते शम्सुद्दौला के साहबज़ादे॥

सिपाही—अरे मियां हम क्या जाने कोई होंगे॥

दूसरासिपाही—(आहिस्ते से सिपाही के कान में) मियां चुप भी रहो॥

इनसे खुरशैदबेगम की बात ठहरी है॥

दूसरासिपाही—हांयहकहोतो हमारे मालिकहीहैं॥

और खिदमतगार से कहा कि अर्ज़ करदो बेगमसाहब की गाड़ी है इस बात पर गाड़ी में खुरशैदबेगम और मुग़लानी भी मुस्कराईं मुग़लानी ने कहा देखो मुड़ीकाटे की बात नाम अबभी नहीं बतलाया अकबर खिदमतगार जो गाड़ी के पास खड़ा था उसको मुग़लानी ने कहा कि क्यों नहीं बतला देता खुरशैदबेगम की गाड़ी है खिदमतगार ने कह दिया कि कहदो खुरशैदबेगम की गाड़ी है खिदमतगार ने आकर मँझलेमियां से कहदिया यह सुन कर बाग़ २ होगये खुरशैदबेगम ने झिलमिली से मँझलेमियां को देखना चाहा मगर अच्छी तरह देख न सकी खुरशैदबेगम की गाड़ी तो दरगाह में गई और मँझलेमियां

चुपके से उठकर मक़बरे पर पहुंच गये इस अर्से में खुरशी-दबेगम की आमदामद ऊई पर्दा होने लगा मँझलेमियां को खटका ऊआ कि अब हमभी निकाले जावेंगे यह कोठे पर जाछिपे औरत ने अपने मर्द से कहा देखो इस मर्दकी ढिठाई मुग़लानी को खटका ऊआ कि ऐसा न हो सि-पाही मँझलेमियां को भी निकाल देवे सिपाहियों से कहा तुम नीचे ठहरो मैं ऊपर देख आऊं मुग़लानी ऊ-पर गई इधर उधर देखा तो कोई मर्द या औरत नज़र नहीं पड़ी पहले तो समझी कि लिहाज़ के सबब से क्या तो मँझलेमियां ने आना मुनासिब नहीं समझा या चले गये यह नहीं जानती मर्दों में कोई ऐसा होगा जिसको ऐसा लिहाज़ फिर मुग़लानी ने छत पर जाकर देखा तो मँझलेमियां मौजूद पहले तो मुग़लानी को देखकर बऊत घबराये जब मुग़लानी ने कहा डरो नहीं क्या तुम कुछ ग़ैर थोड़ाही हो जब खुरशैदबेगम आवें एक तरफ़ को अदब से खड़े होजाना मैं उनसे कह दूंगी मुग़लानी नीचे जाकर खुरशैदबेगम को लिवालाई एकदमसे मँझलेमियां की नज़र खुरशैदबेगम पर पड़ी और मँझलेमियां को खुरशैदबेगम ने देखा फिर तो यह हाल होगया॥

जब नज़र से नज़र दो चार ऊई॥
एक बरछी जिगर के पार ऊई॥
होश जाता रहा निगाह के साथ॥
सब्र रुखसत ऊआ एकआह केसाथ॥

दोनों ने जी कड़ा करके एक दूसरे की तरफ़ नज़र भरकर देखा फिर खुरशैदबेगम लजाकर सितून की ओ-टमें होगईं और दिल में कहने लगीं कि खुदा ने जैसी शक्ल सूरत दीहै अगर ऐसी सीरत भी हो तो क्या कहना है मँझले मियां भी खुरशैदबेगम का ऊस्न जमाल आन बान देखकर हज़ार जान से आशक़ होगये मँझलेमियां

ने मुग़लानी से कहा कि खुरशैदबेगम को मेरी तर्फ़ से अर्ज़ करदो कि मैं दिलोजान से इनका ताबेदार हूं और ज़िन्दगी भर ऐसा ही रहूंगा मुझसे कोई बात इनकी मरज़ी के खिलाफ़ नहीं होगी खुरशैदबेगम ने अपने दिल में कहा कि जैसे मर्द औरतों के साथ अपना क़ौल पूरा करते हैं वैसाही तुमभी करोगे अभी नया २ चाव है खैर देखा जायगा मुग़लानी ने कहा अब हम जाते हैं यह कह कर मुग़लानी और खुरशैदबेगम नीचे उतर आईं और गाड़ी में सवार होकर अपने घर को चली गईं मँझलेमियां भी खुशी २ घर को चले आये अब दोनों तरफ़ से पैग़ाम सलाम होने लगा और बात पुख्ते होकर निकाह का दिन मुक़र्रर हुआ और बड़ी धमधाम से निकाह होगया दोनों मियां बीबी ऐश आराम से रहने लगे एक दूसरे को देखकर जीता था तीन चार वर्ष यही हाल रहा इस बीच में एक लड़का भी खुरशैदबेगम के होगया अब मँझलेमियां की तबीअ़त का रंग बदला घरके दस्तरख्वान से मन हठने लगा लोगों के साग पात की हँडियां चाटने को जी ललचाने लगा भुंडी बद शकल ज़लील औरत को ज़रा उठती जवानी में देखा राल टपक पड़ी मगर अभी लिहाज़ और दबाव से कुछ कर नहीं सक्ते थे॥

आसफुद्दौला खुरशैदबेगम के बापने जब देखा कि हमारे कुछ औलाद नहीं है तो अपनी बेगम से सलाह करके मँझलेमियां को अपनी फ़र्ज़न्दी में रखलिया और अपने मरने के बाद अपनी कुल जायदाद और माल असबाब का मालिक मँझलेमियां खुरशैदबेगम को कर दिया अब मँझलेमियां का नाम नव्वाब मँझले पड़ गया खुरशैदबेगम के माँ और बाप मक्के की हज्ज को चले गये मुग़लानी को बड़ी बूढ़ी समझ कर खुरशैद बेगम के पास

छोड़ गये मक्के से लौटते हुये रास्ते में दोनों का इन्तक़ाल होगया जब यह ख़बर दिल्ली में आई तो मँझले मियां को कुछ अफ़सोस सा हुआ मगर दिल में समझे कि अब ख़ुद मुख़्तार होगये ख़ुरशैद बेगम ने यह ख़बर सुनकर अपना बहुत बुरा हाल किया कई दिन तक खाना नहीं खाया रोते २ आँखें सूज गईं मुग़लानी ने बहुत कुछ समझाया॥

मुग़लानी— उह तुमने क्या अपना हाल कर लिया ऐसा कोई भी करता है बेटा सब्र करो माँ बाप सब के मरते आये हैं सदा रहै नाम अल्लाह का तुम्हारा मियां सलामत रहै सब कुछ है बाग़ बाड़ी हरी है ख़ैर ख़ुरशैदबेगम को थोड़े दिनों में सब्र आगया कुछ दिन तो मँझले मियां नव्वाब चुपचाप अच्छी तरह रहे फिर नोक पंजे निकालना शुरू किया बात बात पर ख़ुरशैदबेगम से बिगड़ने और रूठने लगे मगर ख़ुरशैदबेगम कभी कोई ऐसी बात अपने मुँह से न निकालती थी जिस्से उसके मियां को रंज हो मगर बेचारी ख़ुरशैदबेगम क्या कर सक्ती थी मियां तो और ही धुन में थे ख़ुरशैदबेगम से लड़कर रूठ जाने का कोई बहाना ढूंढ़ते थे॥

ख़ुरशैद बेगम बड़ी होशयार अक़्लमन्द लिखी पढ़ी औरत थी वह मँझलेनव्वाब के मिज़ाज का हाल देखकर ताड़ गई कि कुछ दाल में काला ज़रूर है एक दिन मियां बीबी में इस तरह गुफ्तगू होने लगी॥

बीबी—आज कल तुम बाहर बहुत रहने लगे नहीं मालूम घर में आना कम क्यों कर दिया॥

मियां—अक्सर आदमी आजाते हैं इसलिये उठना नहीं होसक्ता और तो कोई सबब नहीं है॥

बीबी—ऐसे अब कौन नये दोस्त पैदा होगये क्या यह लोग पहले नहीं आते थे॥

मियां—दो चार आदमी पहले आनेवाले भी हैं दो चार और नये आने लगे हैं॥

बीबी—खुदा के वास्ते कहीं ऐसा भी न करना जो बद-वज़े आदमियों का आप के पास जमघट होजावे॥

मियां—नहीं तोबा२ ऐसा होसक्ता है तुम्हारा किधर खयाल है क्या हमको अपनी आबरू का खयाल नहीं औरतें मर्दों के फ़रेबों को क्या जाने खुरशैदबेगम चुप हो रही अब रोज़२ मियां की सोहबत बढ़ने लगी हर क़िस्म के बदमाश खुशामदी मुफ्तखोरे चारों तरफ़ से जुड़गये एक ने सलाह दी हज़रत सलामत कुछ दिल्लगी का जलसा ज़रूर होना चाहिये कुछ गाने बजाने का चरचा थोड़ा सा होना ज़रूर है पहले तो मँझलेमियां ने इन्कार किया कि मौलवी साहब इसमें गुनाह बतलाते थे इस पर यारों ने कहा कि अच्छा दायरे परतो गाना मने नहीं दायरे पर मारफ़त के खयालही हुआ करें मँझले मियां ने इस को क़बूल करलिया खयाल गानेवालों के झुरमट आने लगे चरस के दम मँझलेमियांके साम्हने लगने लगे एक दिन एक मुसाहिब कलावंत को बुलाकर लेगये और उसके गाने की तारीफ़ करना शुरू किया पहले तो मँझले नव्वाब इन्कार सा करते रहे फिर चुप होगये यारों ने झट से ताल तंबूरा मँगालिया और गाना शुरू हुआ नव्वाब साहब के कान में भी रस पड़ने लगा फिर एक मुसाहिब ने तारीफ़ की कि एक रंडी गवालियार से आई है बड़ी हसीन और गानेवाली है यार लोग उसको भी बुला लाये अब तो सब बात की अटक खुलगई नित नये जलसे होने लगे कत्थकों के लौंडे भी आने लगे महल में जाना बहुत कम होगया दो २ दिन होजाते बाहरही रहते॥

खुरशैद बेगम को ज़रा २ खबर पहुंचती थी मगर

बिचारी लाचार थी क्याकरे कहै तो किससे कहै समझावे तो किसको समझावे अन्दर २ रंज अफ़सोस के मारे घुल-कर कांटा होगई॥

मुग़लानी और सब संग की सहेलियों को नव्वाब का और खुर्शैदबेगम का हाल देख २ कर रोना आता था मगर किसी का भी कुछ बस नहीं था यह दास्तान कह कर रामरछपाल से उसकी औरत ने कहा देखा तुमने मर्दका हाल वह इश्क़ वह प्यार मुहब्बत वह मौलवीपन मँझलेमियां का कहां गया, अब इनको उस बीबी के मरने जीने कीभी कुछ परवाह नहीं जिसकी बदौलत अमीर बने बैठे हैं और जिससे कहा करते थे कि तुम्हारे बग़ैर हमको एक दम चैन नहीं पड़ता भला ऐसे काम किसी भले मानस शरीफ़ की बहू बेटीके तो बतलादो जिसने अपने मालिक के होते उसके रोबरू ऐसे खोटेकर्म कियेहों और जिसके पास ऐसी सुहबत रहतीहो और जिसको कुछ भी किसी का लिहाज़ या डर न रहा हो अगर कोई औरत बदच-लन हुई भी होगीतो अपना मुँह काला करके निकल गई होगी इस तरह पर होकर खुल्लम खुल्ला बदफ़ैली नहीं की होगी मुझे बहुत बड़ा अफ़सोस है कि मर्द फिर भी बुराई औरतों केही माँथे रखते हैं॥

रामरछपाल—हम इस बात के क़ाइल नहीं कोई मर्द ऐसे भी होते हैं क्या सब मर्द ऐसे होते हैं मर्दों में बड़े २ सच्चे, वली, पण्डित, जती, ज्ञानी, महात्मा, नेक चलन धर्मात्मा, मौलवी, हकीम, हजारों हैं अगर कोई एक आध ऐसा निकल आया जैसा तुमने बयान किया; तो मर्दों से औरत अच्छी नहीं होसक्तीं॥

औरत—भला तुमने यह सब तो कहा यह नहीं बयान किया कि मर्दों में चोर, बदमाश, डाकू, खनीजार, जाल-साज, दग़ाबाज़, अदालतों में झूंठी हलफ़ उठानेवाले खु-

दगरज़, क्रतघ्नी, ज़ालिम, अन्यायी, अफ़ीमी, चरसी ज्वारी, तमाशबीनी, लौंडों को माशूक़ बनानेवाले, बटमार कितने हैं ज़रा जहलखानों की रपोट तो पढ़ो मर्द ज़ियादे हैं या औरतें मेरा मतलब यह नहीं है कि सब मर्द बुरे हैं औरतें ऐसी हठ धर्म नहीं जो सब मर्दों को एक तरफ़ से बुरा कहने लगें ऐसे हठ धर्म तो मर्दों में हुये हैं कि उन्होंने किसी एक औरत की बुराई देखकर औरत की जिन्सही को बुरा ठहरा दिया और उनके वास्ते आम हुक्म दे दिया कि वह हमेशा जब तक ज़िन्दा रहें ज़मीन से ऊपर बनी हुई क़बर में रहें जिसका नाम महलसरा रक्खा गया है और मरने पर ज़मीन से नीचे की क़बर में रक्खी जावें मर्दों ने औरतों को सब निआमतों से जो भगवान ने इन्सान के वास्ते पैदा की है नाहक़ महरूम कर दिया है फिर भी मर्द अपने आप को मुन्सिफ़ दयावान् और न्यायवान् समझते हैं बड़ा अफ़सोस है॥

रामरछपाल—औरतें घरमें रहती हैं मर्दों के ख़ौफ़ से बाहर नहीं निकलतीं इसलिये उनको कोई मौक़ा बुरा काम करने का नहीं मिलता अगर औरतें भी मर्दों की तरह आज़ाद रहतीं तब मालूम होता कि औरतें कैसी बुरी और मर्द कैसे भले होते हैं॥

औरत—यह बात भी कुछ ठीक नहीं है हज़ारों लाखों औरतें बाहर फिरती हैं कोई भी ऐसे काम नहीं करती है जैसे मर्द करते हैं देखो अंगरेज़ों की औरतें जो पर्दे की क़ैदमें नहीं रहतीं कैसी नेकनाम हैं और उनकी कैसी क़दर है और मैंने माना कि औरतें मर्दों के ख़ौफ़ से कोई बुरा काम नहीं कर सकतीं तबभी औरतें बनिस्बत मर्दों के अच्छी हैं मर्द तो हाकिम परमेश्वर से भी बुरा काम करने में नहीं डरते फिर मर्द मर्दों को भला औरतों को बुरा क्यों कहते हैं दोनों को एकसा समझते तो भी मुज़ा-

यक़ा नहीं था मर्द ने कहा अच्छा अब तुम खुरशैदबेगम का दास्तान तो पूराकरो औरत ने फिर इस तरह कहना शुरू किया मँझलेनव्वाब साहब को लोगों ने ऐसा रंगपर चढ़ाया कि किसी बात की भी अटक और शर्म न रही और महलसरा से दस २ पंद्रह २ दिन ग़ैर हाज़िर रहने लगे जब कभी महल में आते भी तो चुपचाप पलंगपर लेट रहते अगर कभी खुरशैदबेगम पूछती भी कि तबिअत कैसी है तो कह देते सिरमें दर्द है जी अच्छा नहीं है एक दिन खुरशैदबेगम को भी यह बात सुनकर झूंझल आगई खुरशैदबेगम ने कहा कि मैं जानती हूं थोड़ेदिनों से महल की आब हवा बहुत ख़राब होगई है मैं जो हर वक़्त यहां रहती हूं मेरा हाल भी बहुत तंग होगया है और तुमभी जब कभी यहां आजाते हो तुम्हारी तबिअत भी बिगड़जाती है आज कल दीवानख़ाने की आब-हवा बहुत उम्दा है इसलिये मेरी राय यह है कि तुम चन्दरोज़ बराबर दीवा ख़ाने में रहो मैं थोड़े दिन के वास्ते तुम्हारी वाल्दे के पास रहलूंगी मेरा जी भी उनके पास रहने को बहुत चाहता है मँझलेमियां ने अपने दिल में कहा कि बेहतर है जो थोड़े रोज़ को यहांसे टलजावे मगर फिर दिलमें कुछ सोच बिचार कर ख़ामोश होरहे कुछ जवाब नहीं दिया खुरशैदबेगम देख रही थी कि देखें क्या जवाब मिलता है जब बहुत देर तक जवाब न मिला तो बेगम ने फिर पूछा कि मेरी बात का जवाब न दिया इसपर मँझलेमियां ने झुँझला कर कहा कि वाहियात् बात का क्या जवाब दूं औरतों की ऐसी ख़राब आदत होती है कि मर्दों की हर बात में दख़ल दिया करती हैं॥

बेगम— मैंने तो आप की किसी बात में दख़ल नहीं दिया अब्बाजान के मरने के बाद तुमने जो चाहा सो किया है॥

मँझले—हमने क्या किया दो चार आदमी मिलने को आजाते हैं वोही तुमको बुरे मालूम होते हैं तुम तो यह बात चाहती हो कि कोई आदमी रात दिन औरतों की तरह घरमें बैठा रहै॥

बेगम—तुम सब सच कहतेहौ मैं ऐसी ही बुरीहूं तुमभी अच्छे हो तुम्हारे यार दोस्त भी अच्छेहैं जो बात हमारे ख़ान्दान में कभी नहीं हुई थी वह अब होती है क्या तुम यह जानते हो मुझे किसी बात की ख़बर नहीं होती तुम्हें अब किसी का न लिहाज़ है न ख़ौफ़ है न कुछ अपने दरजे और ख़ान्दान का ख़याल है तमाम शहर के बदवज़े बदमाश आप के पास जमा रहते हैं रंडी भड़वे, कत्थक, ख़याल वाले जो भगेड़ खानों में बैठते हैं आप के यार दोस्त बने हैं ऐसे लोगों ने हज़ारों घर बर्बाद कर दिये हैं इस पर आप फ़र्माते हैं कि हमारे यार दोस्तों का आना ना गवार है यह तो वैसे ही दोस्त हैं जैसे किसी औरत ने कहा था मेरे मियां के तीन यार तेली, जुलाहे, और मनिहार, एक बात का मुझे और भी ज़ियादा अफ़सोस है कि तुम लिखे पढ़े आदमी मौलवी कहलाते हो और फिर ऐसे काम करते हो॥

मँझलेमियां को यह बात ख़ुरशैद बेगम की बड़ी कड़वीमालूम हुई रामरछपाल की औरत ने अपने मर्द से कहा कि तुम अब अपने दिल में ख़याल करो ख़ुरशैद-बेगम ने कैसी बात कही थी मँझलेनव्वाब साहब को बुरी मालूम हुई मर्द तो यह बात चाहते हैं कि हम जिस तरह चाहें करें औरत किसी बातमें दम न मारे जो बेचारी चुप चाप रहती भी हैं और समझती हैं कि अगर हमने कहा भी तो क्या होगा वह दिल में घुट २ कर मर जाती हैं और जिस किसी से न रहागया और उसके मुँह से कोई भली बात मर्द की मरज़ी के ख़िलाफ़ निकल गई

तो वह छोड़ दी जाती है या बात २ पर उसको सैकड़ों सख्त बात सुनाई जाती हैं या मार पीट की जाती है मैं तुमसे सच कहती हूं कि ऐसेही मर्द औरतों को बुरा कहते हैं और जिस घर में औरतों की किसी बात की सुनवाई नहीं होती न उनकी भली सलाह मानी जाती है वही घर बर्बाद होतेहैं औरत मर्द के वास्ते वैसीही सलाहकार है जैसा बादशाह के साम्हने वज़ीर होता है अगर सब बात में बादशाह अपनीही मर्ज़ी का काम करेगा वह भी बिगड़ जावेगा और अगर सब बात में वज़ीरही का कहना चलता होगा वहां भी खराबी आजावेगी उम्दै हालत तो उसी वक़्त तक रहैगी जो एक को दूसरे की बात का लिहाज होगा और दोनों एक दूसरे की बात को जांच कर मिल कर काम करेंगे जिस घर में हिन्दू हो या मुसल्मान मर्द औरत की बात का लिहाज़ करता होगा और औरत मर्द की बात का वह घर हमेशा बना रहैगा देखो बनिस्बत और क़ौम के हिन्दुस्तान में बनियों में औरत का जियादा लिहाज है यही क़ौम सब में दौलत मंद है और पुश्तों तक इन लोगोंमें एकसी बात बनी रहती है मँझलेमियां ने उस वक़्त तो सिवाय हां हूं के और कुछ जवाब न दिया मगर दिल में इन बातों को सुनकर बहुत रंजीदा हुए खुर्शैदबेगम अपने मियां की त्यौरी चढ़ीदेखकर चुप होरहीं औरअपने दिल में समझी कि अब खैर नहीं मगर कर क्या सक्ती थी इन का इलाज तो यह था कि सब जायदाद से अलहदै कर दिये जाते जब इनका नशा ढीला पड़ता इनको तो मुफ्त का माल मिला था इनकी आखें फूल रही थीं इनको इस दौलत के नशे में कब सूझता था कि यह दौलत किस मुसीबत से पैदा होती है और इसी से नव्वाब साहिब बन रहे हैं नहीं तो दो कौड़ी को भी नहीं पूछता देखो

औरतें जिनको मर्द कम अक़्ल कहते हैं दौलत की कैसी क़द्र करती हैं जैसी करनी चाहिये औरतों को रुपया पैदा नहीं करना पड़ता उनको अपने मर्दों की कमाई मुफ्त दाख़िल मिलती है मगर वह उसको कैसी हिफ़ाज़त से रखती हैं और कैसे बन्दोबस्त से ख़र्च करती हैं जो काम ऐसे होते हैं जिनमें ख़र्च करने से ख़ान्दान की इज़्ज़त आबरू रहती हो उसमें औरतें अपने ज़ेवर तक ख़र्च करने में उज़्र नहीं करतीं बाल बच्चों की परवरिश उनके पढ़ाने लिखाने के ख़र्च में औरतें दिलसे ख़र्च करती हैं हां फ़िज़ूल वाहियात् ऐश अशरत में रुपया को उड़ाना या बदमाशों मुफ्तखोरों को देने में तकरार करती हैं और सुनो औरतें जिनको मर्द बेवफ़ा कहते हैं ऐसी वफ़ादार होतीहैं कि अगर उनका मर्द आप तो ऐश करे और उसकी औरत रोटी कपड़े को भी तरसै कि ऐसे सैकड़ों हैं तबभी औरतें अपने मर्दों का बुरा नहीं चाहतीं और उसको हर बात में अपने दो ख़ान्दान की इज़्ज़त का लिहाज़ रहता है इस पर मर्द अपने आप को अच्छा औरतों को बुरा कहते हैं भला यह बात ज़बरदस्ती और हठधर्मी की है या नहीं एक और बात भी है जो अक्सर मर्दोंमें है औरतों में नहीं वह यह है कि सिवाय बाज़ारी औरतों के गृहस्थिनी औरतें ऐसी झूंठी टीमटाम नहीं करती जैसे बहुत से अच्छे लिखे पढ़े मर्द करते हैं अगर औरतें कोई नुमायश अपनी हैसियत आमदनी से ज़ियादह करती भी है तो सिर्फ़ उस मौक़े पर करती है जहां वास्ते ज़ाहिर करने इज़्ज़त अपने ख़ान्दान के ज़रूरी होती है यह नहीं कि मियां साहब नौकर तो चार रुपये के जिसमें मुश्किल से सूखी रोटी और मोटे कपड़े का गुज़र हो सके और आपने एकजोड़ा बनवाया बहुत बढ़की मलमल का अंगरखा और बाबरनेट

का कुरता गुलबदन का ढीला या डोरिये का चुस्त पाजामा टाटबाफ़ी जूता चिकन का रूमाल ज़री की टोपी यह जोड़ा पहना इतरमला एक घड़ी जेब में रक्खी और पतली छड़ी हाथ में ली टोपी इस वज़े से ओढ़ी जिस में दो अंगुल मांग नज़र आती रहै शाम के वक़्त पियादे या शाहज़ादे बन कर हवाखोरी के चल निकले अगर कोई किसी की मांगे तांगे की टम २ मिल गई तो क्या कहना नहीं तो रास्ते में किसी नावाक़िफ़ ने अमीर-ज़ादा समझ कर पूछा कि आप पैदल तशरीफ़ लेजाते हैं सवारी न मँगवाली तो आप ने बड़े मिज़ाज से फ़र्माया कि ठंढे वक़्त चहल क़दमी को जी चाहता है तमाम दिन ऐश में रहने से आदमी काहिल होजाता है फिर आप किसी रंडी के घर पहुंचे उसने समझा कोई अमीर आदमी है अब इन्हों ने वहां हज़ारों क़स्में खाकर और भी अपनी अमीरी ज़ाहिर करना शुरू की कि जिसे वह औरत हमारी तरफ़ मुतवज्जै रहै यह मियां के कुछ याद-ही नहीं कि इसके यहां तो दूकान है रात दिन सैकड़ों ऐसे आते हैं अगर वह दोघड़ी मियां की तरफ़ मुतवज्जै भी हुई तो मियां के कितना सवाब मिलेगा जो क़यामत के काम आवेगा या कौनसा ख़िताब मिल जावेगा जिस से दुनियां में नामवरी होगी जब मियां ने पीठ फेरी उसे याद भी नहीं रहैगा कौन जानवर था मगर मियां मिटे जाते हैं रंडी ने ज़िक्र किया कि आज पान नहीं रहे मियांने झट रूमालसे एक चवन्नी निकालकर फेंकदी अरे मियां कोई है पान ले आवो यह कौन बड़ी बात है रंडीके मुंहसे निकला कि बारीक मलमल पर जैसा आपका अंगरखा है दिल्ली में बादामी हलका रंग खूब रंगते हैं मियां फूल गये कि हमारे अंगरखे की तारीफ़ हुई उसी वक़्त आपने फ़रमाया यह कौन बड़ी बात है एक नहीं

दो डुपट्टे उम्दै रँगे हुये आसक्ते हैं यह क्या कुछ मुश्किल है रंडी ने कहा कि अजी हटो भी यह बातें ही बातें हैं तब तो आप ने हज़ारों क़समें खानी शुरू कीं कि अगर परसों को ही डुपट्टा न आजावे तो सही इसको मियां को कुछ परवाह नहीं कि घरमें नाज नहीं बीबी के पास पाजामा भी नहीं अब मियां साहब लोगों से एक २ दो २ रुपया क़र्ज़ मांगते फिरते हैं जो क़र्ज़ मिलगया तो समझे कि कमाया नहीं तो चिट्ठियों के महसूल में से ख़र्च दिया ग़रज़ ज्यों त्यों करके डुपट्टा बनवाया मियां को यह फ़िक्र कि रंडी के अगाड़ी आबरू रहै चाहै घर बार सब जाता रहै चाहै नौकरी छूट जाय चाहै जहलखाना होजाय इसकी कुछ परवाह नहीं आख़िर कार थोड़े दिनों में वही नौबत पहुंची जो होनेवाली थी तब नंगे पैरों फिरने लगे कुछ शर्म नहीं और कहने लगे तक़दीर ख़ुदा की मर्ज़ी भला अब तुम बतलाओ कि मर्द ऐसे २ फ़ेल करके भी आप अच्छे बनते हैं औरतों को बुरा बेवफ़ा बतलाते हैं पड़ोसनें यह बातें रामरक्षपाल की औरत की सुनकर दंग होगईं आपस में कहनेलगीं इसने सब ठीक२ कही है इसमें रत्ती बराबर झूठ नहीं है असल बात यही है कि मर्द जबरदस्त हैं औरतें कमज़ोर हैं मर्दों ने जो चाहा औरतों को ऐब लगा दिया एक बोली हमारे पड़ोस में एक सुनार रहा करता था वह जब बाहर किसी से लड़कर आता घरमें आकर अपनी औरत को मारा करता लड़ाई का गुस्सा बिचारी कमज़ोर औरत पर निकाला करता था ॥

दूसरी—ऐसे सैकड़ों मर्द हैं जरा सी बात हुई झट मारने को खड़े होगये और गाली की तो कुछ बातही नहीं बात २ पर सैकड़ों गालियां दे लेते हैं और फिरभी औरतों का नाम कलहारी रख छोड़ा है ॥

तीसरी—मर्दों ने एक मसल भी तो जोड़ रक्खी है ॥ पशु गँवार ढोल शठ नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी ॥ इसके यह माने कि औरत के इसतरह पीटना चाहिये जैसे ढोल पीटा जाता है इस बात पर सब खिलखिला कर हँस पड़ीं कि वाह मर्दों ने भी खूब मसलें जोड़ीहैं औरत जात निमानी है जो कुछ चाहै कोई कहले अब सब पड़ोसनें के कान उसी तरफ़ लग गये कि देखिये अब रामरछपाल क्या जवाब देता है रामरछपाल ने अपनी औरत से कहा कि जो कुछ तुमने मर्दों की निस्बत कहा है हां मर्द ऐसे भी होते हैं मगर जो अच्छे मर्द हैं ऐसे मर्दों के भी बुरा समझते हैं क्या मर्द ऐसे चाल चलन के मर्दों की तारीफ़ करते हैं हर्गिज़ नहीं बल्कि उनके मर्द बुरा और जलील समझते हैं इन तुम्हारी बातों से सब मर्दों के ऐब नहीं लग सक्ता ॥

औरत—ऐ वाह तुम भी खूब हो जिन ऐबों को मर्द औरतों में बतलाते हैं क्या औरतेंऐसी औरत के अच्छा समझती हैं मर्द तो ऐसे ऐबदार मर्दों के बराबर अपनी सुहबत जलसों दावतों में शरीक करते हैं और उनकी ताजीम करते हैं औरतें तो ऐसी औरत के पास बैठने में लाज समझती हैं तुम मुझे महरबानी करके वह बातऐब की बतलाओ जोमर्दों में तो बिलकुल नहीं सिर्फ़ औरतों में है जिसके सबबसे औरतें ऐसी हक़ीर समझीजातीहैं ॥

मर्द—तुम पहले मँझलेमियां का हाल खतम करो फिर तुम्हारी बात का जवाब दिया जावेगा औरत ने कहा कि मँझलेमियां ने खुरशैदबेगम की बात सुन कर महल में आना बिलकुल छोड़ दिया रात दिन तमाश बीनी, गाने बजाने, चौसर, गंजफ़ा, शतरंज खेलने, पतंग उड़ाने लाल मुर्ग़ लड़ाने, मसखरों से हंसी ठट्ठा उड़ाने, शराब पीने का शग़ल रहने लगा कुछ खबर नहीं कि घर कहां

है और कल को क्या होगा एक मर्तबः कोई नटका डेरा आया यार लोगों ने एक नटनीके हुस्न निज़ाकत करतब की तारीफ़ करना शुरू किया मँझलेमियां को तावकहां हुक्म दिया इसी वक़्त बुलावो ?

किसी क़दर रुपया खर्च हो कुछ परवाह नहीं यारों ने कहा हजर आज शाम को जमुना पार किश्ती में सैर कीजिये उसी मौक़े पर उस नटनी का गाना और करतब भी हो यह बात सब ने पसंद करली शाम को नटनी को किश्ती पर लेगये मँझलेमियां ने देखा कि औरत हसीन कम उम्र है उस पर आशक़ होगये दिल में ठहराया कि इसके साथ निकाह करना चाहिये इस बात का कुछ ख़याल न किया कि किस क़ौम की है जब यार लोगों ने मँझलेमियां की मर्ज़ी देखी झट जोड़ बन्द लगाकर निकाह करादिया मँझलेमियां ने खुरशैदबेगम से पोशीदा दूसरे महल में रक्खा मगर ऐसी बात छुपी कब रहसक्ती थी खुरशैदबेगम को भी खबर हो गई मगर बाहरी खुरशैद बेगम उफ़ नहीं किया और जो किसी औरत ने कहा भी तो उसका यही जवाब दिया कि हमारे मज़हब में चार निकाह तक मर्द को दुरुस्त हैं कुछ मुज़ायका नहीं अगर खुरशैदबेगम चाहती एक दम से सब आमदनी और रुपया अपने क़ब्ज़े में कर लेती उसके बाप की सब चीज़ थी मगर फिर भी उसने मुनासिब नहीं समझा किअपनेमर्दसे झगड़ा करे मँझलेमियां का थोड़े दिन नये २ शौक़ में नटनी से बहुत प्यार रहा फिर वह शौक़ फीका पड़ने लगा एक और कसबी पर जो लखनऊ से आई थी दिल आगया जब नटनी ने सुना कि मियां के पास कोई रंडी आती है तो नटनी ने गाली गुफ्तार जूती पैज़ार करना शुरू किया इसको क्या शर्मथी एक दिन नटनी को ख़बर मिली कि रंडी दीवानख़ाने

मेंहै भट दीवानख़ानेमें चलीआई कसबी और नटनी से खूब गथम गुत्थाहुई बीच बिचावा कराने में मँझलेमियां के कपड़े भी फट गये और दोनोंने मँझलेमियांको जो उन की ज़बानपर आया कहा ख़ुरशैदबेगम की लौंडी बांदी भी गुलगपाड़ा सुन कर दौड़ पड़ीं उन्हों ने सब हाल देख कर ज़रा २ ख़ुरशैदबेगम से कहा ख़ुरशैदबेगम ने अपना माथा पीटलिया कि हाय हमारे दीवानख़ाने में यह बात होने लगी मँझलेमियां को फिर भी शर्म न आई मगर ख़फ़ा होकर नटनी को तलाक़ दे दी कसबी से इक़रार किया कि हम तुझ से निकाह पढ़वावेंगे नटनी जो कुछ उसको हाथ लगा लेकर अपने डेरे में चली गई ख़ुरशैदबेगम को मँझलेमियां के करतूतों से बड़ा रंज था एक तो यह रंज कि मियां हाथ से गये जिसका आसरा दुनिया में औरत को होताहै दूसरे घर लुटने का फ़िक्र तीसरे यह डर कि अगर मियां को कोई बीमारी लगगई तो मुश्किल ज़िन्दगी ख़राब होजावेगी चौथे बे इज़्ज़ती और बदनामी का ख़याल अपने दिल में शोचती थी या इलाही क्या इलाज करूं किस तरह समझाऊं किससे कहूं और अपने दिल में कहती थी कि जिन लोगों ने औरतों की हजो लिखी जो वह लोग ऐसे मर्दों को औरतों के चाल चलन से मुक़ाबिला करें तो अपनी किताबों को दरया में डुबो देवें और अपने लिखने पर पशेमान हों बहुत शोच बिचारकर ख़ुरशैदबेगम ने अपने दिल में तजवीज़ किया कि चुपचाप रहने से सिवाय बिगाड़ के कुछ फ़ायदा नहीं मुनासिब यही है कि बीमारी का इलाज उसके असाध्य होने से पहले करना चाहिये और फिर जब असाध्य होगई तो सिवाय रोने और पछताने के कुछ नहीं होसक्ता ख़ुरशैदबेगम ने समझा कि सारी बुराई भलाई की जड़ रुपया है इसी से

दुनिया के सब काम होते हैं इसी से बदमाशी शौक़ीनी सूझती है नहीं तो किसी ने खूब कहा है॥

जिसको न मिले पेट को तंदूर का बच्चा॥
उसको न पसंद आय परी हूर का बच्चा॥

कोई ऐसी तजवीज़ होना चाहिये जिस्से इनका अख्तियार रुपये के लेने और उड़ाने का न रहै, खुरशैदबेगम ने मुग़लानी से सलाह ली मुग़लानी ने कहा बीबी हमारे यहां क़दीमी दीवान रामानन्द मुनीब हैं बड़े नव्वाब भी हर बात में उनहीं से सलाह लिया करते थे इस घर के बड़े खैरख्वाह हैं उनकी पिन्शन है बहुत दिन से उन बिचारों को भी पिन्शन नहीं मिली वह तुम्हारा पुराना नौकर है उससे बात करने में तुमको कुछ ऐब नहीं खुरशैदबेगम ने यह बात सुनकर उसी वक़्त दीवान रामानन्द को बुलाया और उनसे कहा कि आप को अब इस घर का भी कुछ हाल मालूम है दीवान जी ने कहा सब मालूम है मगर मैं क्या कहूं मेरा क्या अख्तियार है अगर तुम हुक्म दो तो दम की दममें सब इन्तिज़ाम हो सक्ता है खुरशैदबेगम ने कहा कि मेरी तर्फ़ से तुमको सब बातकी इजाज़त है जिसतरह तुमचाहो इन्तिज़ाम करो दीवानजीनेकहा कि एक और बात का हुक्म चाहता हूं कि खुशीराम को जो हमेशह से दीवानख़ाने की ड्योढ़ी पर रहाकरताथा और मँझलेनव्वाब साहबने उसको मौक़ूफ़ करदिया है वह फिर बुलालियाजावे वह बहुत काम का आदमी है उससे सब बदमाश डरते हैं?

खुरशैदबेगम ने इसकी भी इजाज़त देदी दीवानजी खुरशैदबेगम का हुक्म पाकर मँझलेमियां के पास गये और झुकझुर आदाब बजालाये दोनोंकी आपसमें बात होनेलगी॥

नव्वाब—आओ दीवान जी साहब बाद मुद्दत कहां थे अब आपने बिलकुल आनाही छोड़ दिया॥

दीवान जी— खुदावन्द इस सरकार का नमक खाता हूं दुआ करता हूं सरकारही मुझको भूलगये मैं बुढ़ापे से लाचार हूं अब मुझमें चलने फिरने की ताक़त नहींरही घर पर पड़ा रहता हूं॥

आज डौढ़ी पर सरकार ने बुलाया था इसवास्ते हाज़िर हुआ॥

नव्वाब— क्या डौढ़ी पर बुलाया था॥

दीवान जी—जी हां जनाब॥

नव्वाब— क्या काम था?

दीवान जी—सरकार फ़रमाती हैं कि हमारी रियासत की आमदनी खर्च का इन्तिज़ाम आज कल ख़राब है मुझे हुक्म दिया है कि तुम सब काम को देखो मैंने तो उज्र भी किया कि मैं अब बहुत थक गया हूं मुझ से क्या हो सकेगा फ़रमाया कि शादीराम को अपनी मदद के वास्ते बुला लो तुम दोनों हमेशा के नमकख़्वार हो तब मैंने क़बूल करलिया॥

नव्वाब—कोई इन्तज़ाम खराब नहींहै नाहक़ तुम बेचारे बुड्ढों को तकलीफ़ देतीहैं औरतों की भी क्या अक़्ल होती है मँझलेमियां ने इस वक़्त तक यह नहीं समझा था कि दीवान जी सहज २ सब रुपया आमदनी खुरशैद बेगम के तहत में कर देवेंगे हमारा कुछ अख्तियार नहीं रहैगा हमको ख़र्च के वास्ते खुरशैदबेगम की मंजूरी लेनी पड़ा करैगी तो भी मँझले नव्वाब को दीवान जी का दख़ल होना नागवार हुआ दीवान जी से कहा अच्छा आप अभी आराम करें हम आपको बुला लेंगे॥

दीवान जी—खुदावन्द अब मुझे आराम कहां अबजो मैं हुक्म की तामील न करूं तो सारी दिल्ली में नमक

हराम कहलाने लगूं मँझलेमियां ने सोचा बड़ी बेढब हुई यह तो जिन होकर चिपटा अपने दिलमें कहा नौकर आदमी से ज़ियादा इज्जत करना फ़िजूल है चलकर खुरशैदबेगम को समझा देंगे दीवान जी से कह दिया अच्छा आप कल तशरीफ़ लावें दीवान जी चले गये न-व्वाब साहब महल में तशरीफ़ लेगये पहले तो खुरशैदबे-गम के जी में आया कि इनसे बात नहीं करना चाहिये मगर फिर समझी कि आख़िर इन्हीं से नाता है जो अब-भी समझ जावेंगे तो ग़नीमत है गई सो गई अब राख रही को भला यह आज महल में तो आये॥

नव्वाब—आज कैसे उदास सी बैठी हो॥

बेगम—खूब आजका लफ़्ज़ भी आपने खूब कहा हां रोज तो आप मुझे खुश देखतेथे आज आप को मेरा चहरा उ-दास मालूम होता है इस बातपर नव्वाब कुछ शरमाये॥

नव्वाब—खुदा की क़सम तुम तो पहले से बहुत दुबली हो खुदा जाने क्या बात है खुदा के फ़ज़ल से सब बात अच्छी है कोई बात रंज फ़िक्र की नहीं है॥

बेगम—खुदा न करे, रंज फ़िकर दुश्मनों को हो आप को कई महीने से नहीं देखा था इसलिये तबिअ़त उदास रहती थी मगर एक बात अच्छी थी कि आप की खुशी का हाल सुनकर जी खुश होजाता था इसलिये अब तक जिन्दा हूं॥

नव्वाब—शर्म के साथ मुस्करा कर खुदाके वास्ते इतना तो झूठ न बोलो महीनों मैं गयाही कहां था दिन भर काम काजसे फ़ुरसत नहीं होती रात को थककर लेटतेही नींद आजाती है फिर सुबह आंख खुलती है बाजे दिन तो खाना नसीब नहीं होता इसी वास्ते यहां रात को सोने का इत्तफ़ाक़ नहीं हुआ वरनै और क्या बात थी॥

बेगम—बेशक मैं सुन चुकी हूं आपको मेहनत बहुत

रहती है सब काम रियासत का अपने हाथ से करना पड़ता है कोई आदमी अब हमारे यहां ऐसा नहीं जो काम सम्हाले और मालिक को आराम मिले इसीवास्ते मैंने एक तजवीज़ की है अव्वाजान के वक़्त के जो दीवान जी हैं उनको मैंने हुक्म दिया है वह सब काम करेंगे अभी सब काम कर सक्ते हैं उन्हों ने मुझ से वादा भी कर लिया है अब तो मँझलेमियां बहुत चकराये कहा कि नहीं अब तो हमारे पास अच्छे आदमी होगये हैं अब दीवान जी को तकलीफ़ देना क्या फ़ायदा है बिचारे बड़े आदमी हैं अब उनके होश भी दुरुस्त नहीं हैं लोग कहेंगे कि पिन्शन न दी गई इसवास्ते काम लेने लगे॥

बेगम— इसका कुछ मुज़ाइका नहीं ज़रूरत के वक़्त बादशाह तक पिन्शनदारों से काम लेते हैं आप उनसे कोई मेहनत का काम न लें ख़बरगीरी का काम लेवें और दीवान जी के लड़के जीनत को उनकी मदद में कर देवें फिर देखना कैसा बन्दोबस्त रहेगा और आप को किस क़दर आराम मिलेगा॥

नव्वाब— तुम तो नाहक़ फ़िज़ूल ख़र्च बढ़ाती हो हमारी दानिस्त में ख़र्च की तख़्फ़ीफ़ होना चाहिये बेगम ने अपने दिल में कहा कि ठीक कहते हो रंडी, भड़वों नटनियों, हरामख़ोरों का तो कुछ ख़र्च नहीं दीवान जी का बहुत भारी ख़र्च है॥

बेगम—कुछ मुज़ायक़ा नहीं यह लोग हमारे क़दीमी नौकर हैं अगर आप को इनके रखने में कोई हर्ज हो तो जाने दीजिये नव्वाब साहब हर्ज क्या बतलावें लाचार मंजूर किया और दिलमें समझे कि फिर देखा जावेगा अब ज़ियादा इसरार नहीं चाहिये अगले दिन से दीवान जी का अमल दख़ल शुरू हुआ दीवान जी ने हुक्म दिया कि कोई दाख़ला रुपये के वास्ते नव्वाब साहब का बिदून या

बेगम साहब का वह भी पहले दीवान जी को दिखला लिया जावे नव्वाब साहब के मुसाहिबों ने देखा कि यह पुराना ख़बीस कहां से आया सब लोग इन से वाक़िफ़ थे सबने आपस में कहा बड़ी बेढब हुई अब यहां किसी एक का भी दाल गलना मुश्किल है और जब उन लोगों ने सुना कि खुरशैदबेगम ने इन्तज़ाम के वास्ते बुलाया है तो और भी घबराये शादीराम को जो ऐसे बदमाशों का उस्ताद था डौढ़ी पर बैठा देखा एक दूसरे से कहने लगा मियां यह तो सेनाही पलट गई कितने तो डौढ़ी से ही अपने घरको वापिस चले गये दो चार जो आये वह भी उदास नव्वाब साहब ने पूछा क्या सबब है जो सब लोग आये और तुम लोग भी आज उदास मालूम होते हो यह बात क्या है कुछ समझही में नहीं आती मुसाहिबों ने कहा हुज़ूर सारी बात तो यह है कि दीवान जी रामानन्द और शादीराम के खौफ़ से लोग नहीं आये दीवान जी परले दरजे के ख़बीस हैं एक २ कौड़ी पर जान देते हैं जैसे इनके बाप का माल है जब रुपया ख़र्च होगा इनको जान निकलेगी हुज़ूर से तो कुछ नहीं कहेंगे आगे पीछे हम लोगों के सिर हुआ करेंगे और यह शादीराम बड़ा टर्रा आदमी है हम इसको बड़े नव्वाब के वक़्त से जानते हैं ज़रा सी बातपर भले आदमी के सिर होजाता है नव्वाब साहब ने फ़रमाया कि तुमको इन लोगों से कुछ वास्ता और ग़रज़ नहीं तुम लोग बदस्तूर हमारे पास आओ तुमको कोई रोक नहीं सक्ता अगर तुमसे कोई शख्स कुछ तक़रार करे तो हमसे कहो सब मुसाहिबों ने आपस में एक मिसकोट करी और यों गुफ्तगू होने लगी॥

एक—आप लोगों को कुछ मालूम भी है यह नया इन्तज़ाम खुरशैदबेगम ने किया है॥

दूसरा—अच्छाकियाहै करनेदोहमारा क्यानुक़सानहै॥

तीसरा—जी हां आप के नज़दीक़ कुछ नुक़सानही नहीं हज़रत अब वह बात न रहैगी कि जो कुछ चाहा खज़ानची से लिया और खर्च किया यह बुड्ढा खबीस टके २ का हिसाब पूछेगा और बात २ की खबर खुरशैद बेगम को पहुंचेगी जब कोई झगड़ा होगा बेगम साहब दीवान जी की तरफ़दारी करेंगी फिर जो असर बीबी की बात का होगा वह किसी की बात का नहीं होगा॥

चौथा—मियां जब नव्वाब साहब मुँह भी लगावें तुम देखते नहीं महीनों महल में जाकर भी नहीं झांकते॥

पांचवां—यह सब सच है मगर भाई हमको तो मालूम होता है कि हवा का रंग पलट गया अब अगर रहे भी तो क्या आये भी तो क्या जिन बातों से गुज़र चलता था वह अब दूर गईं॥

छठा—मियां अल्लाह मालिक है क्या इतने बड़े इसी घरसे हुए थे एक दर मुंदा सहस्र दर खुले खुदा देनेवाला है नव्वाब साहब को हमारे बग़ैर चैनभी नहीं पड़ेगा रामरछपाल की औरत ने कहा कि देखा अभी बिचारे दीवान जी ने किसी को कुछ नहीं कहा आपसे आप सबके पेट में खलबली पड़गई चोर की डाढ़ी में तिनका आखिर में सबने सलाह की कि सबको मिलकर अभी इस पुराने पापी को निकलवाना चाहिये इसके पैर जमना अच्छा नहीं अगर सब लोग एक दिल एक ज़बान रहें तो इन लोगों का निकलवा देना कुछ बात नहीं यह तो क्या हैं खुद बेगम को अलहदे करा सक्ते हैं इन लोगों ने बात२ पर नव्वाब साहब को भड़काना शुरू किया एक दिन नव्वाब साहब ने दो सौ रुपये का रुक़्क़ा खज़ानची के नाम लिखा एक मुसाहिब रुपया लेने गया खज़ानची ने कहदिया कि दूसरी ताली संदूक़ की दीवान जी के पास है वह आवें तो रुपया मिले फिर क्या था मुसाहिब को बात हाथ

लगी उसी वक्त रुक्का लाकर नव्वाब साहब को देदिया हुज़ूर खज़ानची ने रुक्का नहीं लिया और सैकड़ों लाम क़ाफ़ मुझसे कहीं हुज़ूर की शानमें जो २ बात कहीं उनको गुलाम अर्ज़ नहीं करसक्ता कहा रुपया जब दीवानजी हुक्म देंगे तब मिलेगा सब मुसाहिबों ने क़मरा सिरपर उठा लिया खज़ानची के यह हौसिले होगये हुज़ूर के रुक्के को फेंक दिया क्या उस पाजी ने रामानन्द को हुज़ूरसे भी ज़ियादा समझा है नव्वाब साहब आग होगये हुक्म दिया कि अभी २ उस रामानन्द पाजी नमक हराम बदमाश को पकड़कर लाओ मुसाहिब आस्तीनें चढ़ाकर तय्यार हो गये मगर ज़रा देर में नव्वाब ने कुछ अपने दिलमें सोच समझ कर लोगों को मनै कर दिया कहा इस वक्त नहीं दूसरे वक्त देखा जावेगा अव्वल तो खज़ानची से पूछा जावेगा अपने दिलमें सोचा नव्वाब ने कहा कि यह सब फ़िसाद खुरशैदबेगम का है उसीसे कह कर इन सबको निकलवाना चाहिये मुसाहिबों को रुख्सत करके आप महल में तशरीफ़ लेगये मुसाहिब बिचारे क्या जाने थे कि ऐसी घड़ी रुख्सत होते हैं कि फिर आना नसीब न होगा खुरशैदबेगम अपने मियां को देखकर बाग २ होगई और निहायत खुशी से कहा कि आज का दिन बड़ा मुबारिक है मुद्दत के बाद आप आज इस वक्त महल में तशरीफ़ लाये मैं जानती हूं कि खुदा ने हमारे सख्त दिन दूर कर दिये सँभलेनव्वाब अपने दिलमें कुछ शरमाये कुछ खुश हुये बैठगये खुरशैदबेगम से कहा कि आज हमको एक बातका निहायत रंज है जो कभी नहीं हुआ॥

बेगम—ताज्जुब से खुदा न करे नसीब दुश्मनों को ऐसी क्या बात है ऐ है मेरा तो कलेजा हाथों उछलने लगा॥

नव्वाब—मुस्कराकर नहीं खुदा के वास्ते कोई खौफ़की बात नहीं बात सिर्फ़ यह है कि खज़ानची ने आज ऐसी

बेहूदा नालायक़ हरकत की जिससे हमको अपने हम चश्मों में ज़लील होना पड़ा एक रुक़ा दो सौ रुपये के वास्ते हमने भेजा था वह उस नालायक़ ने वापिस कर दिया कह दिया कि दीवान जीका हुक्म नहीं अगर ऐसा हो हुक्म दीवान जी का है तो हमारा घरमें रहना फ़िज़ूल है मुझे उस वक़्त गुस्सा तो बेढब आया था मगर मैंने ज़ब्त किया सिर्फ़ तुम्हारे लिहाज़ से कि दीवान जी को तुमने बुलाया है अगर तुम्हारा यही मन्शा है कि दीवान जी को हमसे लड़वावें और हमारा दर्जा सिर्फ़ इसीक़दर रहगया है कि नौकर हमारी अदूल हुक्मी करें तो हमको कुछ और फ़िक्र करनी पड़ैगी॥

बेगम— मैं इस बात का हर्गिज़ यक़ीन नहीं कर सक्ती ख़ज़ानची या दीवान जी की यह मजाल नहीं कि वह ऐसी बात कह सकें यह किसी ने आपके मिजाज़ बिगड़ने के वास्ते कहा है आप अभी २ इसकी तहक़ीक़ात करें और जिस किसी का क़सूर हो उसको अभी २ निकाला जावे और फिर वह इस ड्यौढ़ी पर न आवे नव्वाब ने बात टालना चाहा मगर बेगम ने न माना उसी दम ख़ज़ानची को बुलाया उससे पूछा गया ख़ज़ानची ने कहा हुज़ूर जो साहब रुक़ा लाये थे उनसे मैंने सिर्फ़ इस क़दर कहा था कि आप ज़रा ठहरें दूसरी ताली कुफ़लकी दीवान जी के पास है वह आजावें तो तो रुपये मिलें वह साहब ख़फ़ा होकर चलेगये मैंने तो उनको बहुत मनै किया मगर उन्हों ने नहीं माना वह साहब मेरे मुंह पर कहैं कि मैंने और क्या कहा है हुज़ूर हमतो आपके नौकर हैं रुपया पैसा सब आपका है हम लोग इन्कार करने वाले कौन हैं पिछले महीने में यही आप के मुसाहिब चार हज़ार रुपये लेगये हैं भला मैंने कभी इन्कार किया॥

नव्वाब—(चौंककर) क्या एक महीने में चार हज़ार

रुपया बिलकुल ग़लत है तुमने इस क़दर रुपया क्यों दिया हमारा हुक्म नहीं था॥

ख़ज़ानची—भला हुज़ूर मैं क्या जानूं वही आप के मुसाहिबरुपयेलेगयेहैं उनकी रसीद उनके दस्तख़तीमौजूद हैं॥

नव्वाब—इसक़दर रुपया हमको कभी याद नहीं पड़ता॥

ख़ज़ानची—हुज़ूर मैं तो पहलेही डरता था कि किसी दिन यह बला हम लोगों के ज़िम्मे पड़ेगी॥

दीवान जी—मुझे नमक हराम बतलाते हैं कि तूने रुपया लुटाकर ख़ज़ाना ख़ाली कर दिया बेगम साहब मुझ से नाराज़ हैं अबहुज़ूर भी मुझी सेनाराज़ होगये मैं इस नौकरी से बाज़ आया आपने तीन महीने में पिचहत्तर हज़ार रुपया लिया मैं रोज़ हिसाब दिखाने हुज़ूर में गया हुज़ूर ने ललकार दिया हुज़ूर थोड़े दिन का मामला रह गया है जब रुपया नहीं रहैगा मैं आप चला जाऊंगा॥

बेगम—देखा आपने भला बेचारे ख़ज़ानची की मजाल है रुक्क़ा फेरदेवें मैं इसी ताज्जुब में थी कि यह हुआ क्या॥

नव्वाब—हमने इतना रुपया हर्गिज़ ख़र्च नहीं किया यह लो इन्हीं लोगों की बदज़ाती है इन्हों ने तग़ल्लुब किया है॥

बेगम—मेरी दानिस्त में बेहतर यह है कि आप दो तीन रोज़ मुसाहिबों का आना बन्द करें और सब हिसाब को मुलाहिज़ा करें जो रक़म आपके हुक्म से बाहर ख़र्च हुई है उसकी तहक़ीक़ात की जावे नव्वाब तो अपने करतूतों को जानते थे कहते क्या मगर अपने दिलमें समझे कि इन लोगों ने हमको बड़ा धोखा दिया ख़ुरशैदबेगम ने कहा हिसाब मँगाकर देखिये तो कहां २ ख़र्च किया गया है नव्वाब साहब को मंज़ूर नहीं था कि बेगम के रूबरू पड़ताल हो बात को टाले दिया कि मैं फ़ुरसत में देखूंगा ख़ैर जो होगया सो होगया अब कुछ नहीं होसक्ता॥

बेगम—मैं कुछ बात आपसे पूछना और कहना चाहती हूं अगर आप इजाज़त दें और बुरा न मानें और मुझे माफ़ करें॥

नव्वाब—अच्छा कहो बुरा माननेकी ऐसी क्या बातहै॥

बेगम—अगरचे बुरा मानने की बात नहींहै बल्कि भला मानने की बात है मगर मर्दों का मिज़ाज ऐसाही होता है कि जहां कोई बात कोई औरत कैसी ही अच्छी और भले की कहै जिससे आदमी का दीन दुन्या दोनों का भला होता है मगर जो वह बात मर्दकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ हुई उसी वक़्त मर्द नाराज़ होजाता है॥

नव्वाब—यह तुमने खूब कहा मर्दही पर क्या मौक़ूफ़ है यह बात तो हर इन्सान में है जब कोई बात किसी की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होगी वह उसको बुरी मालूम होगी इसमें ख़्वाह मर्द हो या औरत ऐसी कौन सी औरत है कि मर्द चाहै जो कुछ उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कहै या करै उसको बुरा मालूम न हो ख़ुदाने हर इन्सान में यह बात रखदी है कि हर आदमी सब काम अपनी मर्ज़ी के मवाफ़िक़ होना चाहता है॥

बेगम—यह तो आपने सच फ़रमाया मगर ख़ुदाने हर इन्सान की बुरे काम करने की मर्ज़ी के रोकने के वास्ते भी कोई न कोई वसीला बना दिया है उससे इन्सान दबा रहता है और बुरे काम नहीं कर सक्ता और जब बहुत दिन तक बुरे कामों से बचा रहता है तो उसको बुरी बातों से नफ़रत होजाती है फिर कुछ दूसरे के दबाव की भी ज़रूरत नहीं रहती हां अगर फिर कोई ऐसा मसाला जमा होजाता है कि वह बीज फिर हरा होजावे तो फिर उसकी शाखें बढ़ने लगती हैं इसी वास्ते आदमी जो दाना हैं वह ख़ुद बुरी सुहबत से बचते हैं उसको हिदायत करने के वास्ते शरै शरीफ़ काफ़ी है और जिनकेदिल

पर खुदा रसूल के हुक्मों का असर नहीं होता उनकोबुरे कामों से हटानेको बादशाह है या जो बच्चे हैं उनके वास्ते उनकेवली हैं और जो किसी के बस के नहीं वह आप मुसीबत में पड़कर समझते हैं फिरसमझते क्याहैं उम्र भर पछता२ कर मरजाते हैं॥

नव्वाब— जो तुमने कहा हमने माना मगर क्या तुम यह नहीं जानती कि रोज़ अव्वल जैसा जिस किसी को खुदा ने पैदा कर दिया है वह किसी तरह बदल नहीं सक्ता अव्वल तो हर जिन्स का मिज़ाज जुदा है इन में हर बशर का जुदा२ हैअगर कोई चाहे मैं किसी कीकोई आदत छुटादूं या उसकी तक़दीर बदल दूं भला यह किसी तरह हो सक्ता है नीब को कोई मीठा और गन्ने को कोई कड़वा नहीं कर सक्ता आदमी खुद मजबूर है जैसी तक़दीर होती है वैसाही सब ढंग होजाता है॥

बेगम— अजी यह भी सब कहने की बात है अगरयही बात है तो आदमी हर किसी को उसकी तक़दीर पर क्यों नहीं छोड़ देता क्या फ़ायदा क़ुरान शास्त्र हाकिम बादशाह के होने का है चोर को क्यों सज़ा दी जाती है उसकी तक़दीर में चोरी करना है और जिसका माल चुराया उसकी तक़दीर में मालका चोरी जाना है अजी यह बात हर्गिज़ नहीं है आदमी अपनी ताक़त को जिस तरह चाहै काम में ला सक्ता है यह उसके अख्तियारी है सिवाय इसके जो स्वभाव यानी मिज़ाज पैदा हुये हैं उनमें अदल बदल दूसरी चीज़ के मिलने से हो सक्ता है देखो पानी का मिज़ाज सर्द है आगकी सुहबत से गरम होजाता है जब आग की सुहबत दूर हो जावे फिर ठंढा हो जावे इस तरह आदमी की आदत को बद सुहबत बिगाड़ देती है चाहै वह कैसा ही अच्छा हो अच्छा तुम्हीं बताओ क्या तुम ऐसे थे जैसा तुमको तुम्हारे यार

दोस्तों ने बना दिया बस मर्द इसी बात पर औरतों को कम अक़्ल बताते हैं और आप को अक़्लमन्द इन्हीं कर-तूतों पर मर्दों ने औरतों को ऐब लगाये हैं॥

नव्वाब—क्यों मैं कैसा होगया क्या खुदा न ख़ास्ते मैंने कोई ऐब किया और जो तुम इन लोगों को कहती हो जो मेरे पास आजाते हैं तो क्या मैं इन लोगों को नहीं जानता ये लोग कैसे हैं क्या यह लोग मेरे मिज़ाज को बिगाड़ सक्ते हैं तोबा क्या मजाल है आदमी तमाम दिन अकेला कहां तक बैठा रहै यह लोग दो घड़ी दिल्लगी के वास्ते आजाते हैं इधर उधर का हाल ज़रा इनसे मालूम होजाता है और जब दो चार आदमी अपने पास होते हैं तो इससे आदमी की आबरू भी है रियासत भी इससे मालूम होती है यों तो सैकड़ों बनिये महाजन मालदार शहर में पड़े हैं कोई पूछता भी नहीं आदमी का नाम और रियासत दस रुपये के खर्चने और दस आदमी के पास होने से होती है इस लिये मैंने इन लोगों को आने से मने नहीं किया इन बिचारों का खर्चही क्या है कभी रोटी खालेतेहैं कभी दो चार रुपये बतरीक़ इनाम देदिये जाते हैं बिचारे बतौर नौकरों के हर वक़्त ताबेदार बने रहतेहैं जान देने तक को हाज़िर हैं बड़े ताज्जुब की बात है तुम ऐसे लोगों का आना ना पसन्द करती हो॥

बेगम—वाह! ऐसी दिल्लगी और खैर ख़्वाही को भले बिचारे बिचारों की एकही कही हक़ीक़त में यह तो बिन दामों गुलाम हैं आप से इन्हें दिली मुहब्बत होगई है अगर आप कहें तो बेशक ये लोग जलती आग में चले जावें इनको आप के हुक्म से जहन्नुम में भी जाने को उज़्र नहीं जबसे इन लोगों की आमद हुई है हमारी चौगुनी इज़्ज़त बढ़गई है हर गली कूचे में हमारीही चर-चा है मेरा तो तारीफ़ सुनते २ कलेजा भी पक गया अगर

और थोड़े दिन यह ख़ैर ख़ाही और नेकनामी रही तो हमारे घर में सिवाय नेकनामी के और कुछ भी न रहेगा हक़ीक़त में आपने कमाल दानाई की ऐसे लोगों को पास रख लिया जिनका ख़र्च कम ख़ैरख़ाही ऐसी जिसका बयान नहीं जब किसी मर्द की बड़ी क़िस्मत हो और औरत के नसीब फ़टजावें तब ऐसी सुहबत मिले॥

नव्वाब—ये लो तुम तो ख़फ़ा ही हो गई ओफ़ो तुम को इन लोगों के आने का बड़ा रंज है तुमने पहले से नहीं कहा॥

बेगम—ख़ुदा की क़सम जी जल भुन कर राख होगया आज लाचारी को बात पर बात मुंह से निकल गई आप जो फ़र्माते हैं कि पहले हम से न कहा आदमीकहै उससे जो सुने बात सुनना तो दर किनार हम को तो दीदार नसीब नहीं होता था हम तो देखने को भी तरस गये आज आपने कहने का मौक़ा दिया लाचारी की बात मुंह से निकल गई ख़ुदा इस बात को खूब जानता है जो मुसीबत हमारे दिल पर गुज़री है अभी तक तवक़ो नहीं टूटी थी इस लिये जीती हूं ख़ुदा ने औरत को हक़ीकत में बड़ा माजूर पराधीन पैदा किया है मर्द हज़ारों क़िस्म के ज़ुल्म सख़्ती औरतों पर करते हैं औरत बिचारी सब को बरदाश्त करती है और हर तरह की ताबेदारी करती है और जहां तक उससे होसक्ता है मर्द के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करती मर्द हज़ारों बद फ़ैली करते हैं औरत बिचारी अपने मुंह पर मुहर लगाये चुप रहती है फिर भी औरत बुरी मर्द अच्छे औरतों में सब ऐब मर्दों में कोई भी नहीं तुमने कोई रईस ज़ादी भी देखी है जिसके पास क़िस्म २ की बदवज़ा औरतें जमा होती हों और वह औरतों में बैठ कर अपनी बड़ाई मारती हो कि हम ऐसे और ऐसे हैं जैसे डबल पैसे यह ज़ुरअत ख़ुदा

ने कुछ मर्दोंही को दी है कि ऐब करते जावें और भले बने रहें मैं आप से हाथ जोड़ कर कहतीहूं कि मेरे नज़दीक मर्दों में ऐसी समझ के लोग हैं कि बावजूद पढ़े लिखे होने के उनको अपने भले बुरे की तमीज़ नहीं जिन लोगों को आप ख़ैरख़्वाह जांनिसार जानते हैं वह ऐसे लोग हैं जिन्होंने बीसों घर बिगाड़ दिये हैं इनके काटे का मंत्र नहीं यह लोग दुन्या में आदमी को मुफ़लिस कल्लाँच करके छोड़ देते हैं और आक़बत के वास्ते ऐसा मसाला जमाकर देते हैं कि खुदा के साम्हने जवाब देने को कोई बात बाक़ी न रहै मुझे निहायत अफ़सोस है कि आप से दानिश मन्द भी इनके धोखे में आगयेआप को अभी तक तजरबा नहीं हुआ इन लोगों ने कितने दिनों में कितना रुपया ख़र्च करादिया और जब उसका इन्तज़ाम होता देखा तभी उन लोगों के निकलवाने की फ़िक्र की क्या भला आदमियों की दिल्लगी नाच, राग,रंग,रंडी,भड़वे, मसख़रों, शबियों, बदमाशों में हुआ करती है मैं औरत हूं मुझे ही यह बात नापसन्द है तुम मर्दों ही से जो नेकआदमी हैं पूछकर या उनकी नसीहतों को पढ़कर देख लो कोई भी इस बात को अच्छा कहता है हुज़ूर दुन्या में नव्वाबी, राजाई, बादशाही,उमराई,इज्जत,हुर्मत सब रुपये से है नहीं तो आदमी को कोई दो कौड़ी को भी नहीं पूछता नज़ीर का कौड़ीनामा पढ़ कर देखलीजिये रुपये को हमेशा उम्दे काम में ख़र्च करना चाहिये इन मुफ्त के तावेदारोंसे तो बहतर है आप दश पांच भले आदमी नौकर रख लें आदमी शैतान आदमी है इस वास्ते आदमीको हमेशह बुरी सुहबत से बचना चाहिये और जब आदमी का दिवाला निकल गया क़र्ज़दार होगया इज्जत आबरू जाती रही फिर अफ़सोस करने से कुछ नहीं होसक्ता॥

फिर पछताये से क्या होता है, चिड़ियां चुगगईं खेत। अब रोकर क्यों आंसू देत। अगर मैंने इन बातों में कोई बात ग़ैर मुनासिब कही हो तो आप फ़रमावें कि मैंने कौनसी बात बेजा कही है हां अगर मर्द सिर्फ़ यह समझ कर कि औरत ने अपनी ज़बान से कही है इसको मानना नहीं चाहिये, तो यह और बात है इसका कुछ इलाज औरत के पास नहीं है॥

नव्वाब—भली बात कहने में मर्द औरत क्या भली तो भलीही है उसे कोई कहै॥

बेगम—यह बात मैंने इसवास्ते कही कि मर्दों का क़ौल है कि औरत की कोई बात मानना नहीं चाहिये॥

नव्वाब—यह कुछ बात नहीं कि औरत को उम्दै बात भी नहीं मानना चाहिये!

बेगम—शुक्र है तो जो बात मैंने कही हैं क्या तो आप उनको रद्द करें नहीं तो उनको मान लेवें?

नव्वाब—बस तुम्हारा मतलब यही है ना कि किसी को पास न आने दें रात दिन चुप चाप सुनसान रहा करे एक पैसा ख़र्च न हो और तुम्हारा क्या मतलब है मौल-वी साहब बैठे हुये वाज़ कहा करें वरनै यों करो एक पण्डित को कथा कहने बैठा दो यह दीवान जी के काम भी आवेगी यह बात सुनकर खुरशैदबेगम के आंसू निकल पड़े निहायत उदास होकर कहा कि आप का भी वही हाल है मैं न समझूं तो भला क्या कोई समझाय मुझे, ख़ैर जो क़िस्मत जो नसीब जो मुझे कहना था, वह मैं कह-चुकी अब आप की जो खुशी में आवे करें अफ़सोस है कि आपने मेरी एक बात पर भी ग़ौर न किया आपको तो आपके मुसाहिबोंने वह चाट लगाई है कि उसके साम्हने दूसरी कोई बात भली नहीं मालूम होती नव्वाब ख़फ़ा होकर उठ खड़े हुये बेगम ने अपने दिल में समझा कि

भला पत्थर को भी कहीं जोंक लगी है पत्थर तो फ़ौलादी औज़ार से ठीक बनता है अब इनको कोई ऐसी बात भी सुझानी चाहिये जिससे कुछ डर भी पैदाहो देखे तब क्या होता है बेगम ने कहा कहां चले ज़री तो बैठो क्या नाराज़ होगये नव्वाब ने कहा नहीं नाराज़ी की कुछ बात नहीं अब हम जाते हैं॥

बेगम—जो मैंने अर्ज़ किया उसका आपने कुछ जवाब न दिया क्या आयंदह भी ऐसाही अमल रहैगा जैसा अब तक हुआ है॥

नव्वाब—देखा जावेगा जैसा मुनासिब होगा वैसा किया जावेगा क्या हम अपने नफ़े नुक़सानको नहीं समझते क्या हमको ऐसी भी अक़्ल नहीं जैसी तुम को है॥

बेगम—मैं बिचारी तो औरत नाक़िस अक़्ल हूं आप खुदा के फ़ज़्ल से आलिम फ़ाज़िल हो जो कुछ आपने अब तक किया वह सब दानाई का काम किया है अगर कोई औरत ऐसा काम करती तो जान से न मारी जाती या घर से न निकाली जाती अब लाचार मुझे एक बात और भी कहनी पड़ी जहां आप मेरी और बातों पर ग़ौर करें इस पर भी करलेवें वह यह है कि आयंदे से आप हर्गिज़ ऐसा फ़िज़ूल खर्च नहीं कर सकेंगे हम कोई जंगल से पकड़े हुये नहीं आये न लौंडी मोल लिये गयेहैं हमभी अपना इन्तज़ाम करेंगे और देखेंगे कौन बदवज़ै आदमी दीवानख़ाने में आता है भला कोई आतो ले यह बात सुनकर नव्वाब साहब का खयाल उसी दम बदल गया बेगम ने ऐसी त्यौरी बदली कि नव्वाब को कोई बात कहते न बनपड़ी बेगम उठकर दूसरे कमरे में चली गई हुक्म दिया कमरा बन्द करदो नव्वाबसाहब भी दीवानख़ाने में चले गये और पलँग पर लेट रहे और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये॥

रामरक्षपाल की औरत ने अपने मर्द से कहा कि तुमने यह सब दास्तान सुनी इन्साफ़ से कहो कि औरत की समझ अच्छी थी या मर्द की हक़ीक़त में जितने मर्द शैतान के बन्दे होते हैं औरत नहीं होती औरतें अपनी सारी उम्र रँडापे में काट देती हैं और अपनी नेकनामी में किसी तरह का धब्बा नहीं लगने देती भला मर्द भी रँडपेपन में पाक साफ़ रह सक्ता है कभी नहीं देखो नव्वाबसाहब को भली बात कैसी कड़वी लगती है मर्द कहते हैं कि औरतों की उलटी मत होती है क्या ऐसे मर्दों की समझ उलटी नहीं कि बड़े खान्दान को बर्बाद किये देता है और कुछ ख़बर नहीं कि कल को क्या होगा यही एक मर्द ऐसा नहीं सैकड़ों ऐसे हैं॥

मर्द—मर्द को भगवान ने औरत का हाकिम बनाया है इसलिये औरत को हर तरह मर्द की ताबेदारी करना चाहिये जो औरतें मर्दों पर ऐब लगाती हैं यही उनके वास्ते ऐब है मर्द हर तरह की तकलीफ़ मुसीबत उठाकर कमाते पैदा करते हैं औरतों की परवरिश करते हैं यह क्या अहसान मर्दों का औरतों पर थोड़ा है बग़ैर मर्द के औरत किसी काम की भी नहीं खुरशैदबेगम के यहां नव्वाब भी तो मर्दोंही को पैदा की हुई थी कुछ औरतों की पैदा की नहीं थी मर्द अगर बिगाड़ते हैं तो वही पैदा भी करते हैं औरतें कभी किसी बात में मर्दों पर ऐब नहीं लगा सक्तीं॥

औरत—पहले मैं तुम्हारे पिछले फ़िक़रे का जवाब देती हूं पहले फ़िक़रे का जवाब फिर दूँगी आप ने फ़रमाया कि औरतें कभी किसी बात में मर्दों पर ऐब नहीं लगा सक्तीं औरत मर्द की ताबेदार है उसको मर्द पर ऐब लगाना वाजिब नहीं इससे आप के कहने का मतलब तो यही हैना कि मर्दों में चाहे लाखों ऐब हों मगर औरतों

को अपनी ज़बान पर लाना मने है यों ही सही इसको भी मैं मंजूर करती हूं फिर मर्द आप भले बनकर औरतों में ऐब क्यों लगाते हैं अपने गरेबान में मुँह डाल कर चुप चाप रहें गोमगो रहने दें दूसरे को तो वह ऐब लगावें जो आप ऐबों से पाक हो आप सैकड़ों ऐबों का सरदार होकर दूसरों को अनहोते ऐब लगाना ज़बरदस्ती और हठधर्मी करना है अब रही दूसरी बात कि मर्द रुपया पैदा करके औरतों की परवरिश करते हैं यह भी ठीक नहीं है दुनया के धंधों और घरके कामों में मर्द औरत बराबर है बल्कि औरतें बनिस्बत मर्दों के जियादा मेहनत करती हैं अगर औरतों के काम पर खयाल करो तो औरतों के खर्च रोटी कपड़े का कुछ भी अहसान औरतों पर नहीं है जो छोटी क़ौम है उनमें तो औरतें सिवाय घरके कामों के उस पेशे में भी मर्दों की मुवाफ़िक़ करती हैं जैसे जुलाहे, छीपी, धोबी, तेली, भड़भूजा, मनिहार, मोची, दर्ज़ी, काछी, बनबटे मजदूर, लीलगर, कुम्हार वग़ैरः और जो लोग तिजारत पेशा हैं उनकी औरतें रोटी बनाने पीसना चौका बरतन साफ़ करना बाल बच्चों को रखना, कातना यह सब काम करती हैं मर्द तो सिर्फ़ इतनाही काम करते हैं कि दूकान पर बैठे रहते हैं काश्तकारों की औरतें भी इसी तरह मर्दों की बराबर काम देती हैं हजारों औरतें ऐसी हैं कि रात दिन में उनको सिर्फ़ दो तीन घंटे आराम मिलता है ऐसी हालत में मर्दों का यह अहसान जताना भी फ़िज़ूल है कि हम औरतों की परवरिश करते हैं औरत तो कभी नहीं कहती कि हम कितना काम करती हैं कितनी जात में तो मर्द कुछ भी नहीं करके औरतें सब काम करती हैं जैसे कहार दिन भर पड़े हुये खंजरी बजाते हैं औरतें पानी भरती हैं भंगी आप कुछ भी नहीं करते उनमें सब

काम औरतेंही करती हैं मैंने तो ऐसे सैकड़ों मर्द सुने हैं सुबह हुई पिंजरा लिया बाहर निकल गये उनकी माँ या औरत ने पीसना पीसकर एक आने का नाज मँगाकर रोटी करी मियां साहब आये खा गये फिर चले गये उन को इस की भी कुछ परवाह नहीं दूसरे के वास्ते चाहे बचे या न बचे इसपर आप कहते हैं कि मर्द औरतों की परवरिश करते हैं मर्द औरतों के सलाह मशवरे से काम करते हैं या जहां औरतों का कहना चलता है वहां बरकत होतीहै जहां कहना नहीं चलता वहां मर्द बर्बाद होते हैं मँझले नव्वाब अगर पहले से बेगम की सलाह से काम करते तो क्यों इतने बदनाम और जेरबार होते॥

मर्द—अब तुम नव्वाब का दास्तान पूरा करो रात के दो बजगये हैं आँखें झुकी पड़ती हैं औरत ने इस तरह कहना शुरू किया कि जिस वक़्त नव्वाब पलंगपर लेटे हुए करवट बदल रहे थे दीवान जी भी आ पहुंचे आदाब अर्ज करके बैठगये दीवान जी ने पूछा आज सरकार की तबिअत कुछ उदास है इसका क्या सबब है नव्वाब साहब ने पहले तो इन्कार किया जब दीवान जी ने बहुत इसरार किया तो नव्वाब साहब ने फ़र्माया कि जिस मर्द के घरमें औरत मर्द के ख़िलाफ़ होगी उस मर्द को कभी खुशी हासिल नहीं होसक्ती दीवान जी ने कहा सच है मगर आपका मज़मून तो तो इससे ख़िलाफ़ है आपको तो खुदा ने ऐसी नेकपारसा अक़्लमन्द ताबेदार फ़रमाबरदार औरत दीहै कि अगर चराग़ लेकर ढूंढिये तो भी नहीं पायेगी आप ऐसी बात क्यों फ़र्माते हैं जो बात आप को नागवार है मैं समझ गया अगर क़सूर माफ़ हो तो अर्ज करूं अबभी कुछ नहीं गया जैसी सुहबत आपके पास जमा हुई है अगर यह सुहबत थोड़े दिन और रही तो आप किसी लायक़ भी नहीं रहेंगे आप इनके नाम पर

लाहौल पढ़ें और फिर आप अपना वही दस्तूर अख्तियार करें जो पहले से था और बुजुरगों से चला आया है या जो भले आदमियों का शहर में है आप को खुरशैद बेगम का मशकूर होना चाहिये जो आपको दीन दुन्या की ख़राबी से बचाती हैं नव्वाब के दिल पर उस वक़्त दीवान जी के कहने का कुछ ऐसा असर हुआ कि उसी वक़्त सब बातों से तोबा की और दीवान जी को हुक्म दिया कोई ऐसा आदमी जो हमारी तबिअत बिगाड़े आने न पावे और खुश २ महल में चले गये खुरशैदबेगम को उदास देखकर प्यार किया बेगम ने उसी वक़्त ताड़ लिया कि अब मालूम होता है बुरे फ़ेलों से बाज़ आये यह खयाल आतेही बेगम का चहरा खुश होगया इस२ मियां बीबी में बात होने लगी पिछले सारे रंज धोये गये और सब काम का बंदोबस्त होगया यह दास्तान तमाम करके रामरछपाल की औरत ने कहा कि औरतों को वही मर्द हजो कहते हैं और ऐब लगाते हैं जो आप ऐबों से भरे हुए हैं जो उम्दै आदमी हैं वह औरत मर्दों में सिर्फ़ जिस्म का फ़र्क़ समझते हैं उनको भेड़बकरी की मुवाफ़िक़ नहीं समझते अब मुझे भी नींद आती है अगर तुमको कोई और ऐतराज़ हो सोच रखना अभी मुझे मर्दों की दास्तान बहुत याद हैं जो मौक़ा हुआ कल रात को फिर सुनाऊंगी पड़ोसनें भी अँगड़ाई लेकर उठ खड़ी हुईं सब ने कहा जो जिंदा हैं कल फिर सुनेंगे॥

इति